CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२७२८

श्री गायत्री तत्व विवेचन

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लौटानेकी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

2084

ॐ

॥ श्री गायत्रीतत्त्वविवेचनम् ॥

(हिन्दीभाषानुवादसहितम्)

लेखकः

इटावामण्डलान्तर्गतसलेमपुरग्रामवास्तव्यसुधीशिरोमणि-
-विद्वत्सार्वभौमश्रीपं० श्यामलालशर्मसूनुः—
ज्योतिर्वित् श्रीपं० शिवदत्तशास्त्री व्या० आ० आ०
कर्मकाण्ड विशारदः

सङ्केतः—पुस्तक का मूल्य निष्शुल्क है। लोक-
काल्याणार्थं ही प्रकाशित की गई है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लेखक :—ज्योतिर्वित्श्रीपं० शिवदत्तशास्त्री

व्या० आ० आ० कर्मकाण्डविशारद

स्थान—सलेमपुर पत्रालय—अछल्दा मण्डल—इटावा (उ० प्र०)

प्रकाशक :—श्री अनन्तराम गुप्त

मकान नं० :— ४६/७१ हटिया लोहाई कानपुर (उ० प्र०)

नोट—डाक व्यय भेजने पर पुस्तक नि:शुल्क भेज दी जायेगी।

भाद्रसुदि १५ मंगलवार संवत् २०२७

पुस्तकप्राप्ति स्थान—

(१) श्री चन्द्रशेखरत्रिपाठी
एम. ए., एल. टी. (डी. जी. पी.)
लेक्चरर
७३ मुहल्ला ठाकुरान
मु० पो०—लखना
जिला इटावा (उ० प्र०)

(२) श्रीकृष्णहरी-हरीकृष्ण
४८/२७७ सरांय,
कानपुर (उ० प्र०)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

समर्पणम्

सतनामण्डलान्तर्गत चित्रकूट पीलीकोठी संस्कृत महाविद्यालयप्रधानाचार्य-विद्वत्प्रकाण्ड-सकलशास्त्रतत्व-निष्णात-व्याकरणसाहित्यायुर्वेदवेदान्ताचार्याद्यनेकोपाधिविभूषितवैयाकरणशिरोमणि-महाकारुणिकपूज्यपाद श्री १०८ पण्डितरामेश्वरदयालुत्रिपाठिकरकमलयोरिदङ्गायत्रीतत्वविवेचनस्पुष्पाञ्जलिरूपेण सादरं समर्प्यते ।

श्रद्धयावनतेन-

शिवदत्तशास्त्रिणा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

॥ प्राक्कथन ॥

वेद अपौरषेय हैं अर्थात् किसी पुरुष के बनाये नहीं हैं अतएव वेदों का उल्लेख सर्व सम्मत से पूर्ण मान्य है। ऋग्वेद–यजुर्वेद–सामवेद इन वेदों में श्री गायत्री देवी का वर्णन सुचारु रीति से आया है। इसी कारण श्री गायत्री का महत्व और भी अधिक है। उपनिषत्–पुराण–एवम् उपपुराण तथा धार्मिक सभी ग्रन्थों में श्री गायत्री देवी की महिमा का विवेचन अधिक विस्तार पूर्वक किया गया है। गायत्री वेद जननी है गायत्री से बढ़कर पाप नाश करने में कोई मन्त्र ही नहीं है। याज्ञवल्क्य स्मृति में स्पष्ट लिखा है "गायत्री वेद जननी गायत्री पाप नाशिनी। गायत्र्यास्तु परन्नास्ति दिविचेह पावनम्" गायत्री से बढ़कर पवित्र कोई मन्त्र ही नहीं है। पापनाश करने में गायत्री से बढ़कर कोई मन्त्र नहीं है। एकबार भी यदि गायत्री मन्त्र जप लिया जाय तो समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं। कूर्म-पुराण में लिखा है कि "गायत्रीञ्चैववेदांश्च तुलयासमतोलयत्। वेदाएकत्रसाङ्गास्तु गायत्री चैकतःस्मृता" अर्थात् गायत्री को तथा समस्त अङ्गों समेत वेदों के तौलने पर गायत्री का पल्ला बहुत भारी रहा अतएव गायत्री की श्रेष्ठता वेदों आदि से भी अधिक है।

तीन जन्म के पापनाश करने में गायत्री से बढ़कर कोई मन्त्र नही है। प्रचीन काल में सभी महर्षियों ने श्री गायत्री महामन्त्र के प्रभाव से ही असंभव को संभव कर दिखाया था। श्री गायत्री की उपासना से ही ऋषि मुनि आदि प्रभावशाली तथा विशेष तेजस्वी हुये हैं। महर्षि विश्वामित्र को कौन नहीं जानता है। श्री गायत्री महामन्त्र के प्रभाव से अतुल तेजस्वी एवम् प्रबल प्रभावशाली हुये। महर्षि वशिष्ठ के ब्रह्मबल को देखकर "धिग् बलं क्षत्रियबलं बलं ब्रह्म बलं स्मृतम्" निश्चय करके गायत्री के उपासना से ही ब्रह्मर्षि कहलाये तथा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अपूर्व ब्रह्म बल प्राप्त किया था। महर्षि वशिष्ठ आदि के समान ब्रह्मर्षि विश्वामित्र भी वेद आदि विषय में पूज्य माने जाते हैं। श्रीमद्भागवत महापुराण स्कन्ध नवम अध्याय १५वें में स्पष्ट लिखा है कि महर्षि श्री ऋचीक का चरु (खीर) में स्थापित ब्रह्म तेज महर्षि विश्वामित्र में परिपूर्ण था। तथा स्वयम् गायत्री की विशेष उपासना से पूर्ण ब्रह्मर्षि होने के कारण गायत्री महामन्त्र के आचार्य मानने में महर्षियों ने पूर्ण निश्चय किया था।

महर्षि गौतम-वशिष्ठ व अत्रि आदि ऋषियों ने गायत्री की उपासना से ही संसार में असंभव कार्य करके प्रभावशाली हुये हैं।

यह निश्चित तथा निर्विवाद है कि गायत्री के जप से मनुष्य इहलोक तथा परलोक इन दोनों लोकों के पूर्ण सुखको प्राप्त कर सकता है। पद्मपुराण में—"ब्रह्महत्यादि पापानि गुरुणि च लघूनि च। नाशयत्यचिरेणैव गायत्रीजापको द्विजः" पराशरस्मृति में "गायत्री जप कृद् भक्त्या सर्व पापैः प्रमुच्यते" अर्थात् ब्रह्म हत्या के छोटे से लेकर बड़े से बड़े पाप गायत्री के जप के प्रभाव से सब नष्ट हो जाते हैं। "सर्वेषामेववेदानांगुह्योपनिषदान्तथा। सारभूतातु गायत्री निर्गता-ब्रह्मणोमुखात्" अर्थात् गायत्री वेद तथा उपनिषदों का सार मानी गयी है क्योंकि ब्रह्माजी के मुख से निकली है। श्री मद्भगवद्गीता में भगवान् कृष्ण ने कहा है कि "गायत्रीछन्दसामहम्" अर्थात् छन्दों में मैं गायत्री नाम का छन्द हूँ।

गायत्री महामन्त्र में २४ अक्षर हैं इन चौबीस अक्षरों में एक एक अक्षर में ज्ञान-विज्ञान तथा आध्यात्मिक आधिभौतिक आदि विषय का भण्डार भरा है। केवल एक ही अक्षर का यदि पूर्ण ज्ञान हो जाय तो उस मनुष्य को संसार में कोई वस्तु दुर्लभ नहीं है। प्रति अक्षर की मुद्रा। प्रति अक्षर का ऋषि। प्रति अक्षर की शक्ति (देवी)। प्रति अक्षर का भौतिक विषय तथा प्रति अक्षर से षट्चक्र विभेदन क्रम आदि का यदि पूर्ण ज्ञान हो जाय तो मनुष्य देवताओं से भी अधिक शक्तिवान् हो सकता है। गायत्री महामन्त्र में अत्यधिक मत्व

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पूर्ण रहस्य भरा हुआ है। महात्माओं एवं विद्वानों से सुनकर यही सच्चा निष्कर्ष निकला कि गायत्री से बढ़कर उत्तम कोई मन्त्र नहीं है तथा इससे बढ़कर कोई देवता नहीं है। तथा गायत्री से बढ़कर किसी का महत्व नहीं है। यहाँ तक शास्त्रों में लिखा है कि "वेदा: साङ्गास्तुचत्वारोऽधीता: सर्वेथवाङ्मया:। गायत्रीं योनजानाति वृथातस्य परिश्रम:॥ इत्यादि। अर्थात् साङ्गचारों वेद आदि का अध्ययन करने पर यदि गायत्री को नहीं जानता है अर्थात् गायत्री के गुप्त रहस्य को नहीं जानता है तो उसका सम्पूर्ण परिश्रम व्यर्थ है। अत: प्रत्येक द्विज का गायत्री जप करना परम कर्तव्य है।

गायत्री के विषय का सम्पूर्ण ज्ञान होना अति कठिन है जहाँ तक इसका ज्ञान उपस्थित कर सकता था उतना लोक कल्याणार्थ उपस्थित किया। यह "श्री गायत्री तत्व विवेचनम्" नाम की पुस्तक हिन्दी भाषानुवाद सहित—श्री ला० अनन्त राम जी गुप्त जो कि श्री गायत्री देवी के परम उपासक हैं तथा उनकी प्रवृत्ति सदा धर्म कार्य में रहती है उनके आग्रह मे लिखकर पूर्ण की। यद्यपि गायत्री के विषय के अनेक ग्रन्थ प्रकाशित हैं किन्तु सभी ग्रन्थ प्राय: संस्कृत में होने से श्री लाला अनन्त राम जी को पूर्ण सन्तोष नहीं होता था। अत: सरल हिन्दी भाषानुवाद करके दी। प्रिय पाठकगणों से नम्र निवेदन है कि मानव स्वभाववश त्रुटियों का होना स्वाभाविक है अत: जहां जहां त्रुटियाँ हों वहाँ सुधार लें तथा सूचित करने की कृपा करें। ताकि उनका संशोधन अग्रिम संस्करण में प्रकाशित किया जा सके।

यदत्रस्खलितङ्किञ्चत् प्रमादेनभ्रमेणवा ।
तत्सर्वंशोधयन्त्वार्या: कस्यनस्खलिन्मन: ॥ १ ॥

गच्छत: स्खलनङ्क्वापिभवत्येवप्रमादत: ।
हसन्तिदुर्जनास्तत्र समादधतिसज्जना: ॥ २ ॥

विनीत : शिवदत्त शास्त्री

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रकाशक का वक्तव्य

सन्त-महात्माओं एवं सुयोग्य विद्वानों द्वारा 'श्री गायत्री महामन्त्र' के महत्व को अनेकों वार सुन करके मेरे हृदय में चिरकाल से यह प्रवल भावना थी कि "श्री गायत्री महामन्त्र के विषय की कोई पुस्तक सरल हिन्दी भाषा में प्रकाशित हो कि जिससे साधारण जनता को भी लाभ हो सके यह सोच विचार कर परमपूज्य परमादरणीय 'श्री शिव सूत्र रहस्य' आदि अनेक ग्रन्थों के लेखक व्याकरण साहित्यायुर्वेद धर्मशास्त्र ज्यौतिष तन्त्रादि विषय के सुयोग्य विद्वान् श्रीमान् पं० शिव-दत्त शास्त्री, स्थान-सलेमपुर। पत्रालय-अछल्दा। मण्डल इटावा निवासी जी से श्री गायत्री महामन्त्र के विषय में ग्रन्थ लिखने की प्रार्थना की— उन्होंने मेरी प्रार्थना स्वीकार कर "श्री गायत्री तत्व विवेचनम्" यह पुस्तक सरल हिन्दी भाषा सहित तैयार कर मुझे दी। पुस्तक प्रकाशित होकर आप लोगों के कर कमलों में सादर समर्पित है। पाठकगणों से नम्र निवेदन है कि इस पुस्तक से आप लोग अवश्य लाभ उठावें कि जिससे लेखक एवं प्रकाशक का प्रयास सफल हो। श्रीमान् परमपूज्य शास्त्री जी की रचित अन्य सभी पुस्तकों की तरह इसका भी वितरण निःशुल्क रक्खा गया है। अतः इसे निःशुल्क समझ कर दुरुपयोग न करके सदुपयोग करने की कृपा करें।

श्रीमान् पूज्य शास्त्री जी की अनुपस्थिति में इसका प्रकाशन होने के कारण तथा मेरी अल्पज्ञता एवं अनवधानता आदि के कारण त्रुटियाँ अवश्य रह गई होंगीं उन्हें सुधार लें तथा मुझे सूचित करने की कृपा करें ताकि अग्रिम संस्करण में सुधार हो सके।

भवदीयानुचर :—

अन्तराम गुप्त

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ग्रन्थ परिचय

इस पुस्तक का नाम "श्री गायत्री तत्व विवेचनम्" अर्थात् गायत्री में क्या रहस्य है इसका वर्णन है। सर्व प्रथम "गायत्री" का परिचय देना आवश्यक है। ब्रह्म मुख से निकलने से "ब्रह्म गायत्री" नाम पड़ा। अथवा ब्रह्म का अर्थ है वेद वेदों की परमशक्ति होने से "ब्रह्म गायत्री" नाम पड़ा। गायत्री छन्द होने से 'गायत्री' नाम पड़ा। अनेक कारणवश गायत्री नाम पड़ा। यहाँ कुछ परिचय दे रहा हूँ। ऐत्तरेय ब्राह्मण में लिखा है कि—"गयान् प्राणन् त्रायते" इति गायत्री। अर्थात् जो प्राणों की रक्षा करे वह गायत्री है। गय का अर्थ प्राण है। शङ्करभाष्य में भी गय, शब्द का प्राण अर्थ किया है यथा—"गयान त्रायते गायत्री" अर्थात् जो प्राणों की रक्षा करे वह गायत्री है। वृहदारण्यक ५१–४।४ लिखा है कि "यद्यत् प्राणान् त्रायते तस्माद् गायत्री" इति। अर्थात् जो प्राणों की रक्षा करे वह गायत्री है। महर्षि याज्ञवल्क्यने भी कहा है कि जो प्राणों की रक्षा करे वह गायत्री है। याज्ञवल्क्य–वशिष्ठ आदि महर्षियों ने गय का प्राण अर्थ किया है। "गयान् प्राणान् त्रायत इति वा गायत्री।

बहुत आचार्य यह अर्थ करते हैं कि—"गीयतेतत्वमनया" इति गायत्री। अर्थात् जिससे तत्व जाना जावे वह गायत्री है। अथवा "गायन्तन्त्रायते सा गायत्री" अर्थात् जो गाने वाले की रक्षा करे वह गायत्री है। अथवा "चतुर्विंशत्यक्षराणांसत्वेन गायत्री छन्दः–गायत्रीति् अर्थात् चौबीस अक्षर वाला 'गायत्री' छन्द होने से गायत्री नाम पड़ा। निरुक्तकार कहते हैं कि "गायत्री गायतेः स्तुतिकर्मणः" इति। अर्थात् स्तुति कर्म कहे जाने से–छन्द को गायत्री कहते हैं। विद्व वृन्द अनेकानेक प्रकार से अर्थ करते हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री गायत्री महामन्त्र—ॐ भूर्भुवस्स्वस्तत्सवितुर्वरेण्यम्भर्गोदेवस्य धीमहि धियो योनः प्रचोदयात् । यही गायत्री है इसी का विवेचन इस पुस्तक में सुचारु रीति से किया गया है चौबीस अक्षरों की पूर्ति का प्रमाण यह है कि "रण्यम्" के स्थान पर "णियम्" करने से २४ अक्षर पूर्ण हो जाते हैं–इसका विवेचन विशद रूप से किया गया है

"ॐ" क्या है इस पर भी अनेक अर्थ किये हैं जैसे अ+उ+म्=इनसे "ओम्" यह बना है। ॐ से व्याहृतियाँ प्रकट हुई और व्याहृतियों से वेद प्रकट हुये। वृहद् हारीति स्मृति में लिखा है कि—सर्वेषामेव मन्त्राणाङ् कारणम्प्रणवः स्मृतः। तस्माद् व्याहृतयोजातास्ता-भ्योवेदत्रयन्तथा ॥ इति ॥ भूः से ऋग्वेद। भुवः से यजुर्वेद। स्वः से सामवेद प्रकट हुआ॥ "ॐ" के विना जप पूजन दान आदि कर्म निष्फल हो जाते हैं। ॐ के प्रभाव से विष्णु-विष्णुत्व को। ब्रह्मा ब्रह्मत्व को तथा शिव शिवत्व को प्राप्त हुये हैं। यथा—ॐ इत्येकाक्षरध्यानाद् विष्णुर्विष्णुत्व माप्तवान्। ब्रह्मा ब्रह्मत्वमापन्नः शिवतामभवच्छिवः। इति। ॐ शब्द के बहुत अर्थ हैं यह सब विवेचन किया गया है। 'ॐ' यह सभी मन्त्रों का सेतु अर्थात् पुल है—जैसे लोग पुल से शीघ्र पार हो जाते हैं वैसे ॐ की सहायता से साधक शीघ्र मन्त्र के फल को प्राप्त कर लेता है। ॐकार की व्याख्या सुन्दर की गई है अर्थ भी अच्छा किया गया है।

व्याहृतियों (भूर्भुवः स्वः आदि) में बड़ा रहस्य भरा है बिना व्याहृतियों के जप–पूजन आदि सफल नहीं होते हैं अतएव व्याहृतियाँ परमावश्यक है। गायत्री महामन्त्र में इसी कारण ॐ के सहित तीन व्याहृतियों का योग किया गया है। व्याहृतियों का विशद अर्थ स्पष्ट किया गया है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गायत्री महामन्त्र का अर्थ स्पष्ट किया गया है—यह भी बतलाया गया है कि गायत्री के अर्थ असङ्ख्य हैं इसका समाधान समुचित दिया गया है। तथा भ्रमात्मक संदेह दूर किये गये हैं।

चौवीस अक्षरों में प्रति अक्षर के मुद्रा-देवता आदि दिखाये गये हैं। त्रिपदा गायत्री चतुष्पदा गायत्री आदि का भ्रम सुचारु रीति से दूर किया गया है।

जप के लिए कौन सी गायत्री श्रेष्ठ है तथा पूजन आदि में कान गायत्री श्रेष्ठ है यह सब सप्रमाण वर्णन किया है।

गायत्री महामन्त्र से प्रत्येक देवता की उपासना की जा सकती है। तथा देवताओं में लिंग (पुलिंग—स्त्रीलिंग—नपुंसकलिंग) का दर्शन नहीं मानना चाहिये। देवता सभी स्वरूप धारण करने वाले हैं। यह सब सप्रमाण वर्णन किया है।

षट्चक्र विवरण। कूर्मचक्र विवरण। भूत शुद्धि। अनेक प्रकार के न्यास। अन्तः पूजनादि। वाह्य पूजनादि। आवरणों में देवताओं का आवाहनादि तथा पूजनादि। शापोद्धार क्रम। जप विधान। मुद्राओं के विषय में भ्रम निवारण। अनेक प्रकार की गायत्री आदि विस्तृत रूप से वर्णित हैं। साधारण अनभिज्ञ व्यक्ति के लिये जप का नियम तथा अभिज्ञ (विशेष जानकार) के लिये जप का विधान विस्तारपूर्वक किया है। मुद्रान्यास—शापोद्धार—कूर्मचक्र आदि कहाँ तक आवश्यक हैं इन सब का भी विवेचन स्पष्ट है।

त्रिपदा गायत्री यही है विश्वामित्र कल्प में इसी त्रिपदा में ६–६ अक्षर के चार चरण मान लिये हैं—यथा—तुर्यपादं विना मन्त्रं प्रातः सन्ध्यामथाचरेतृदिति ॥ सप्तमपरिच्छेदे—श्लोकः ॥६५॥ कुछ

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आचार्य्यं जन "परोरज से सावदोम्" इसको चतुर्थ चरण मानते हैं। वस्तुतः त्रिपदा गायत्री में अनेक कल्पनायें आचार्य भेद से हैं सर्व सम्मत नहीं हैं। इन सबका निर्णय सुजन समुदाय स्वयं कर लें।

इसी त्रिपदा में चार चरण हैं– ६–६ अक्षर के। अथवा "परोरजसेसावदोम्" इन आठ अक्षरों के जोड़ने से चार चरण बन जाते हैं। अतएव यह गायत्री त्रिपदा तथा चतुष्पदा भी है।

श्री गायत्री के शाप का रहस्य—अनेक सन्त महात्माओं आदि का यह पूर्ण निर्णय है कि–श्री गायत्री महामन्त्र के प्रभाव का कुपात्र लोग दुरुपयोग न कर सकें अतः उन व्यक्तियों को शाप दे दिया है न कि गायत्री को–अन्यथा ब्रह्मा-वशिष्ठ-विश्वामित्र आदि जो कि गायत्री की उपासना से ही पूर्ण शक्तिवान् हुये हैं उनको गायत्री को शाप देने की कोई क्षमता न थी।

देवी भागवत में–ब्रह्मादयोपि सन्ध्यायान्तान्ध्यायन्ति जपन्ति च।
वेदाजपन्ति तान्नित्यं वेदोपास्या ततःस्मृता ॥

इत्यादि प्रमाण से सिद्ध है कि सभी ने श्री गायत्री की उपासना की है।

देवी भागवत में यह प्रसङ्ग आया है कि अरुण नाम का दैत्य श्री गायत्री की उपासना ही से देवताओं के साथ अनेक प्रकार के अत्याचार कर रहा था उस समय बृहस्पति आदि ने जाकर गायत्री उपासना बन्द करवा दी थी। महर्षि गौतम ने भी ब्राह्मणों को गायत्री विमुख होने आदि का शाप दिया हैं।

श्री गायत्री महा मन्त्र में देवता निर्णय—गायत्री महामन्त्र में परब्रह्म स्वरूप तेज का ध्यान है– उपासना में इसे सूर्य - विष्णु - शिव- ब्रह्मा - गणेश आदि तथा देवी स्वरूप मानकर लोग ध्यान व पूजन करते हैं। गायत्री मन्त्र का अर्थ प्रधान शक्ति परक जानना चाहिये। भगवती ने स्वयम् हिमालय से कहा है कि—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ईश्वरोऽहञ्च सूत्रात्मा विराडात्माऽहमस्मिच ।
ब्रह्माहं विष्णुरुद्रीच गौरी–ब्राह्मी च वैष्णवी ॥ १ ॥
सूर्योऽहन्तारकाश्चाहन्तारकेशस्तथास्म्यहम् ।
पशुपक्षिस्वरूपहञ्चाण्डालोऽहञ्चतस्कर: ॥ २ ॥
व्याघ्रोऽहङ्क्रूरकर्माऽहं सकर्माऽहम्महाजन: ।
स्त्रीपुन्नपुंसकाकारोप्यहमेननसंशय: ॥ ३ ॥

इत्यादि सप्तमस्कन्ध में ३३वें अध्याय में स्पष्ट है कि–मैं सव कुछ हूँ- ब्रह्मा - विष्णु - रुद्र–स्त्री–पुरुष–नपुंसक आदि। सारा संसार मुझमें समझना चाहिए।

जव भगवती सभी स्वरूप वनती है तव गायत्री मन्त्र में प्रत्येक देवता का स्वरूप मान कर ध्यान जप आदि करने में कुछ भी सन्देह नहीं रह जाता है। अत: गायत्री मन्त्र से सभी देवताओं की उपासना की जा सकती है। भगवती जगदम्वा ने यक्ष वनकर देवताओं की परीक्षा की थी। अतएव गायत्री दुर्गा आदि सभी शक्तियाँ एक ही हैं केवल कार्य भेद से भिन्न भिन्न प्रतीत है।

जव भगवती परब्रह्म रूप में है उस समय पूर्वोक्त लक्षण कुछ भी नहीं रहते हैं। अर्थात् जव निराकार हो जाती है। महाकाल संहिता में भगवान् शंकर ने पार्वती से कहा है कि तुम अचिन्तनीय–असीम–शक्ति रूप–प्रत्येक जीव का अधिष्ठान और सत्ता ही तुम्हारा स्वरूप है। त्रिगुणातीत द्वन्द रहित शुद्ध बुद्धि से जानने योग्य होने से तुम निश्चय परब्रह्म रूप हो। तुम न बालिका, न युवती, न वृद्धा हो, न पुरुष, न स्त्री, न नपुंसक, न देवी, न दानवी, न किन्नरी ही हो। तुम अद्वितीय परब्रह्म हो।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्लोक—अचिन्त्यामिताकार शक्तिस्वरूपा प्रतिव्यक्त्यधिष्ठान सत्वैकमूर्तिः ।
गुणातीत निर्द्वन्द बोधैकगम्यात्वमेका परब्रह्मरूपेण विद्या ॥१॥
नवालानचत्वंवयस्थान वृद्धा न च स्त्री न षण्ढः पुमान्नैवचत्वम् ।
नचत्वं सुरीना सुरीकिन्नरीवा त्वमेका परब्रह्मरूपेण सिद्धा ॥२॥

देवी भागवत में द्वादश स्कन्ध में भगवती ने स्पष्ट कहा है कि मैं परब्रह्म हूँ रूपहीन हूँ। सगुण तथा निर्गुण हूँ इत्यादि।

श्लोक— अतऊर्ध्वम्परंब्रह्म मद्रूपंरूपवर्जितम् । निर्गुणंसगुणञ्चेति द्विधा-
मद्रूप मुच्यते । निर्गुणम्मायायाहीनं सगुणम्मायययायुतम् ॥

ये सभी विषय श्री गायत्रीदेवी में भी निश्चित हैं। श्री दुर्गादेवी, श्री राधादेवी, श्री लक्ष्मीदेवी, श्री सरस्वतीदेवी, श्री सावित्रीदेवी, (श्रीगायत्रीदेवी) ये पाँच महाशक्तियाँ प्रधान मानी गई हैं। देवी भागवत नवम स्कन्ध में पूर्ण विवरण स्पष्ट रीति से लिखा हैं। श्री गायत्री का वर्णन तो अनेक पुराणों में वेदों में, उपनिषदों में तथा अन्यान्य प्रमाणित ग्रन्थों में अति विस्तार से है।

इस पुस्तक को आद्यन्त पढ़ने से गायत्री के विषय में कोई शङ्का नहीं रह जाती है।

लेखक—शिवदत्त शास्त्री

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अनुक्रमणिका

१. मङ्गलाचरण .. .. ..
२. श्रीगायत्री महामन्त्र व अर्थ .. .. ..
३. जपकाल की गायत्री .. .. ..
४. सर्वसाधारण व्यक्ति के लिए जपका नियम ..
५. त्रिपदा चतुष्पदा गायत्री पर विमर्श .. ..
६. कामना सिद्धि और उपद्रव शान्ति के लिए गायत्री देवी के विविध प्रयोग ६ से १५ तक
७. प्रसङ्गवशषट्चक्र विवेचन १५
८. कूर्मचक्र विवेचन १६
९. विशेष आवश्यक वक्तव्य १७-१८
१०. श्रीगायत्री देवी का ध्यान १९
११. श्रीगायत्री महामन्त्र १९
१२. श्रीगायत्रीमन्त्र के प्रत्यक्षर के ऋषि आदि का चक्र .. २०-२१
१३. भूरादिसप्तव्याहृति व्याख्या .. .. २२ से २५ तक
१४. ओम् की व्याख्या २६
१५. गायत्री व्याख्या शास्त्राधार २७-२८
१६. गायत्र्यर्थ २९-३०
१७. गायत्री का अर्थ हिन्दी भाषा में २९-३०
१८. ब्रह्मचारी तीन प्रणव लगाकर जपें ३१
१९. गृहस्थ दो प्रणव लगाकर जपें ३१
२०. त्यागी एक प्रणव लगाकर जपें ३२
२१. अजपा गायत्री स्वरूप ३२
२२. पञ्चप्रणवयुक्तगायत्री ३२

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२३. व्याहृति गायत्री ३२
२४. त्रिपदा गायत्री ३२-३३
२५. गायत्री पुरुष हैयास्त्री ३४-३५
२६. चूडा गायत्री ३६
२७. सप्तप्रणव गायत्री ३६
२८. गायत्री महामन्त्र का उद्धार ३६
२९. यन्त्रोद्धार ३६
३०. माला संस्कार ३७-३८-३९
३१. भूतिशुद्धिविवेचन ३९-४०-४१

॥ इति प्रथम भाग: समाप्त: ॥

३२. अथगायत्री महामन्त्र का अनुष्ठान विधान प्रारम्भ .. ४२
३३. न्यासवर्णन ४२
३४. प्रणवन्यास ४२
३५. अथव्याहृतिऋष्यादिन्यास: ४३
३६. गायत्रीऋष्यादिन्यास ४४
३७. शिरसऋष्यादिन्यास: ४४
३८. गायत्र्याव्याहृतिन्यास: ४५
३९. गायत्र्यक्षरन्यास: ४५-४६-४७
गायत्र्या:पदन्यास: ४७-४८
४०. गायत्र्या:पादन्यास: ४८-४९
४१. गायत्रीकरन्यास: ४९
४२. गायत्रीहृदयादिन्यास: ४९
४३. गायत्र्या:षडङ्गन्यास: ५०
४४. लयाङ्गन्यास: ५०-५१
४५. अथपीठन्यास: ५१
४६. गायत्री का ध्यान व अर्थ ५२-५३
४७. मानसपूजा ५३
४८. वाह्यपूजा ५४

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

४९.	श्रीगायत्रीदेवी पूजाविधान	५५ से ६२ तक
५०.	श्रीगायत्री पूजायन्त्रम्	६३
५१.	पीठपूजा	६४-६५-६६
५२.	आवरणपूजा	६६-६७-६८-६९
५३.	विशेषसङ्केतः	७१-७२
५४.	गायत्रीशापविमोचन विधि	७३-७४
५५.	शुद्धगायत्री का ध्यान वजप	७४
५६.	अथ गायत्रीकवचम्	७५-७६-७७
५७.	श्री गायत्रीकवच का हिन्दी भाषानुवाद	७७-७८
५७.	गायत्रीहृदयम्	७९-८०
५८.	गायत्री हृदय का हिन्दी भाषानुवाद	८०-८१-८२
५९.	श्रीगायत्रीगोत्रनिर्णय	८२
६०.	अथषोडशाक्षरागायत्री	८२
६१.	अथषट्यक्षरागायत्री	८२
६१.	अथशताक्षरागायत्री	८२
६२.	गायत्री के तीन स्वरूप	८३
६३.	अथगायत्री के पादों पर विचार	८३
६४.	ग्रन्थकर्तुः परिचयः	८४

इति अनुक्रमणिका समाप्ता ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

॥ श्री सद्गुरवे नमः ॥

(श्रीशिवसूत्ररहस्यरचयिता)

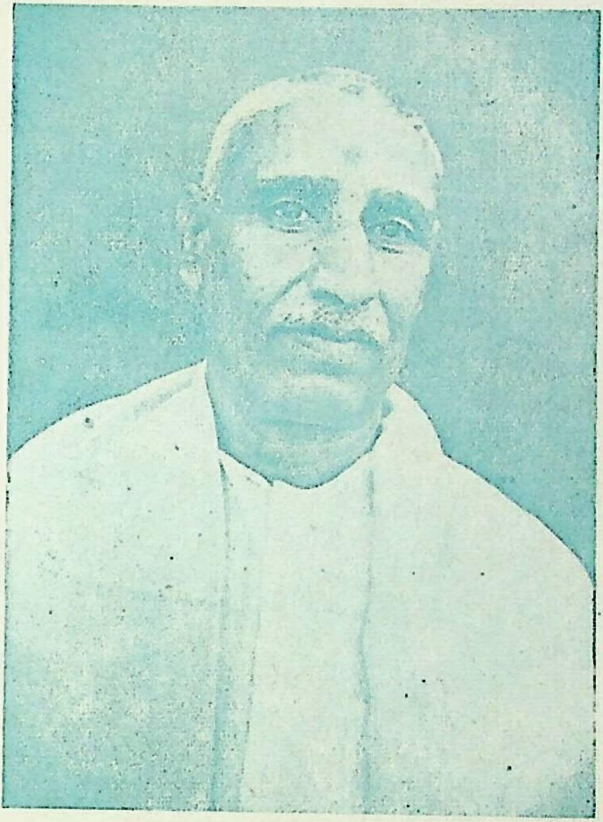

'श्रीशिवस्तोत्र' व 'श्रीहनुमत्स्तोत्र' आदि अनेक स्तोत्रों के रचयिता श्रीशिवसूत्ररहस्य आदि ग्रन्थलेखक–प्रवक्ता–ज्यौतिष–व्याकरण–तन्त्र-साहित्य-धर्मशास्त्र आदि के अति सुयोग्य विद्वान्-परमपूज्य गुरुदेव श्रद्धेय-प्रातःस्मरणीयश्री १०८ श्रीमान् पं० शिवदत्त जी शास्त्री ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

॥ श्रीगायत्रीदेव्यैनमः ॥

॥ श्रीगायत्रीतत्वविवेचनम् ॥

॥ प्रथम भागः ॥

ओं तद्यत् सवितुर्वरेण्यममलम्भर्गः परब्रह्मणो देवस्याथ परस्य धीमहिधियो योनोहिसत्कर्मसु । प्राणादीञ्श्च प्रचोदयात्तु सविता-ध्येयम्मुनीन्द्रैः सदा । गायत्र्याः सुविवेचनम्भवतिवै तस्य प्रसादादिह ॥१॥

पितरं श्यामलालाख्यम्मातरम्पार्वतीं सतीम् ।
मूर्ध्ना प्रणम्यगायत्र्याः कुर्वे तत्वविवेचनम् ॥२॥
गङ्गायादक्षिणेभागे कालिन्द्या उत्तरे तथा ।
सलेमपुरकेग्राम इटावा मण्डले शुभे ॥
कान्यकुब्जकुलेजातस्त्रिपाठी द्विजवंशजः ।
ग्रन्थस्यास्य च निर्माता श्रीशिवदत्तनामकः ॥३॥

॥ अथ गायत्री महामन्त्र ॥

ॐ भूर्भुवः स्वस्तत्सवितुर्वरेण्यम्भर्गोदेवस्यधीमहिधियो योनः प्रचोदयात् ।

अर्थ—हम उस परब्रह्म परमात्मा के तेज का ध्यान करते हैं जो पृथिवी, अन्तरिक्ष और स्वर्ग आदि लोकों का प्रकाशक है । जो प्राणों का भी प्राण हैं, जो सब दुखों से मुक्त करने वाला है ; जो सुखस्वरूप है अर्थात् जिसके ध्यान से परम सुख प्राप्त होता है । जो चराचर ब्रह्माण्ड को उत्पन्न करने वाला है । जो मानने योग्य है । तथा जो शुद्ध स्वरूप है । वह परमब्रह्म हमारी बुद्धि को सत्कर्म में लगावे । गायत्री महामन्त्र का अर्थ विशेष विस्तृत आगे लिखा जायगा ।

॥ जपकाल की गायत्री ॥

ॐभूर्भुवः स्वस्तत्सवितुर्वरेणियम्भर्गो देवस्यधीमहिधियोयोनः प्रचोदयात् ॐ ॥

अर्थपीछे लिखा है । विशेष विस्तृत अर्थ आगे लिखा जायगा ।
शङ्कासमाधान—यहां भ्रम में नहीं पड़ना चाहिए कि कौन मन्त्र जपा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जाय। दोनों के प्रमाण मिलते हैं। ब्रह्मपुराण में इसका प्रमाण मिलता है। पश्चात् लिखा मन्त्र तो प्राय: सभी ग्रन्थों में ऐसा ही मिलता है– बहुमत से लोग पश्चात् लिखा मन्त्र वैसा ही जपते हैं। कुछ लोग इसे जपते हैं।

कोई एक जपना चाहिए। अनेक आचार्य हुए हैं अनेक मत हैं। अतएव जैसी गुरु परम्परा हो वही मत सर्व मान्य है।

॥ सर्व साधारण के लिए जप का नियम ॥

यदि सन्ध्या–प्राणायाम–श्री गायत्री का आवाहन विसर्जन तथा न्यास मुद्रा आदि का कुछ भी ज्ञान न हो तो स्नान करके शुद्ध होकर सूर्य को अर्घ्य देकर श्री गायत्री महामन्त्र जपना चाहिए। पूर्ण ज्ञान श्री गायत्री के जप आदि का आगे विस्तृत रूप से लिखा जायगा।

॥ त्रिपदी चतुष्पदी गायत्री पर विमर्श ॥

ऊपर लिखी हुई श्री गायत्री त्रिपदी है। अर्थात् इसमें तीन पाद हैं। जपकाल में सदा त्रिपदा ही श्रेष्ठ तथा कल्याणप्रदा शास्त्र में निश्चित है। बहुत से आचार्य्य इसी गायत्री में 'परोरजसेसावदोम्' यह आठ अक्षर का एक चरण और जोड़कर चतुष्पदी बना देते हैं यह भी शास्त्र मत है किन्तु चतुष्पदी गायत्री केवल पूजन तथा न्यास में काम आती है अन्य सभी कार्यों में त्रिपदी ही शास्त्र संमत से निश्चित है। कुछ आचार्य चतुष्पदा अन्य गायत्री मानते हैं वह मत मेरे समझ में नहीं आ रहा है। विज्ञजन निर्णय करें।

श्लोक— जपेतु त्रिपदा ज्ञेयाचार्चनेतुचतुष्पदा।
दशजप्तातुसादेवी दिनपापप्रणाशिनी
शतंजप्तातुसादेवी पातकेभ्यस्समुद्धरेत् ॥ १

अर्थ—जप काल में त्रिपदा गायत्री ही श्रेष्ठ तथा शास्त्र संमत है। पूजन आदि में चतुष्पदा श्रेष्ठ है। १० वार जपने से दिन के पाप नष्ट होते हैं। १०० वार जपने से सभी पाप नष्ट हो जाते हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री गणेश वर्णी दि. जैन (शोध) संस्थान नरिया (का.) वाराणसी

कामना सिद्धि और उपद्रव शान्ति के लिये श्री गायत्री देवी के विविध प्रयोग

१–एक हजार गायत्री जप करके दूध वाले (पीपर-गूलर-पाकर-वट) वृक्ष की लकड़ी से हवन करने से समस्त भूत, प्रेतादि बाधायें तथा ग्रहारिष्ट की शान्ति हो जाती है।

२–कण्ठ पर्यन्त जल में जप करने से महामृत्यु तक का शमन हो जाता है, सभी आपत्तियाँ दूर हो जाती है। यद्यपि कुछ आचार्यों ने जल में गायत्री जप निषिद्ध कहा है किन्तु वह मत सर्वसम्मत नहीं है।

३–सुवर्ण-चांदी-तांबा-मिट्टी अथवा किसी दूध वाले वृक्ष की लकड़ो से बने पात्र में पञ्चगव्य भर कर एक हजार गायत्री जप करन के पश्चात् दूध वाले वृक्ष की लकड़ी से गायन्त्री मन्त्र से पञ्चगव्य से स्पर्श करके हवन करे तथा वलिदान करे तो किसी द्वारा किये गये मारण आदि प्रयोग सभी विफल हो जाते हैं। समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं। संकेत-पञ्चगव्य से मार्जन करना चाहिये।

४–पृथ्वी पर चतुष्कोण मण्डल बनाकर भूमण्डल के मध्य में यदि भूत, प्रेत, पिशाच, ब्रह्मराक्षस, बेताल, किन्नर,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भैरव, कूष्माण्ड आदि का उपद्रव हो तो एक हजार गायत्री जप करके एक लोहे की कील गाड़ देना चाहिये। "सभी भौतिक उपद्रव शान्त हो, उपद्रवकारी नष्ट हों, भस्म हों, यह कहकर कील गाड़ देना चाहिये। सभी भयंकर भी अरिष्ट दूर होंगे।

५–एक कलश बिना छिद्र का हो,(सुवर्ण-चाँदी आदि का हो) उसमें जल भर के तीर्थों का आवाहन कर इलायची, चन्दन, कपूर, जायफल, गुलाब, मालती, विल्वपत्र, विष्णुकान्ता, सहदेवी, धान, जव, तिल, सरसों, पीपल, गूलर, पाकर, वट आदि के कोमल पत्र छोड़ देना चाहिये तथा २७ कुश भी छोड़ दे, एक हजार गायत्री जप से जल को अभिमन्त्रित करे, इस अभिमन्त्रित जल से मार्जन करने से तथा दैनिक पान करने से अति कठिन पैशाचिक उपद्रव शान्त होते हैं। तथा सभी प्रकार के कल्याण प्राप्त होते हैं। अपमृत्यु भय दूर होते है। मनुष्य चिरायु होता हैं। सभी आपत्तियाँ दूर होती होती हैं। गायत्री जप करने वाला सिद्ध हो जाता है।

६–शनिवार के दिन पीपल वृक्ष के नीचे बैठकर केवल १०८ बार जप करने से भौतिक उपद्रव तथा शत्रु जनित सम्पूर्ण बाधायें नष्ट होती हैं शत्रुगण परास्त होते हैं।

७–गुर्च का हवन (खण्ड-खण्ड करके हवन) करने से सभी रोग शान्त हो जाते हैं, मृत्यु भय टल जाता है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नोट--गुरच के खण्ड दूध में भिगोकर हवन करना चाहिये।

८–आम के पत्ते दूध में भिगोकर गायत्री द्वारा हवन करने से सभी प्रकार के ज्वर नष्ट हो जाते हैं। शरीर नीरोग रहता है

९–मीठे वच का हवन करने से (गायत्री मन्त्र द्वारा) क्षय रोग नष्ट हो जाता है। शरीर में, विशेष शक्ति बढ़ती है।

१०–दूध, दही, घृत का हवन गायत्री मन्त्र द्वारा करने से राजयक्ष्मा दूर हो जाती है।

११–गायत्री मन्त्र द्वारा खीर का हवन करे, कुछ शेष रखकर उस शेष भाग को सूर्य को अर्पण करके खाने से भी राजयक्ष्मा रोग नष्ट होता है।

१२–शंख वृक्ष के पुष्पों का हवन गायत्री मन्त्र द्वारा करने से कुष्ठ रोग दूर होता है।

१३–अपामार्ग (लटजीरा) का हवन गायत्री मन्त्र द्वारा करने से मृगी-उन्मादि आदि रोग दूर होते हैं।

१४–गूलर, बट, पीपल, पाकर की लकड़ी का हवन गायत्री मन्त्र द्वारा करने से प्रमेह रोग (बीसों प्रकार के प्रमेह) दूर होते हैं। तथा हाथी, घोड़ों, गौओं आदि के सभी रोग दूर होते हैं तथा सर्प, विच्छू आदि विषधर जीवभय

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नष्ट होता है। लक्ष्मी कीं प्राप्ति होती है। सकल कल्याण होते हैं।

१५–दूध तथा घृत को विल्व फल के खण्डों को गायत्री मन्त्र द्वारा हवन करने से अपार लक्ष्मी को प्राप्ति होती है। धन की कमी नहीं रहती है। सुवर्ण से घर परिपूर्ण हो जाता है।

१६–सात दिन तक बिल्व फल, काहवन, विल्व वृक्ष की लकड़ी द्वारा गायन्त्री मन्त्र से सात दिन तक हवन करने से धन धान्य लक्ष्मी को अपार प्राप्ति होती है। प्रतिदिन दो सौ आहुतियाँ देनी चाहिये।

१७–कोई भी पुरुष गायत्री मन्त्र को १०० बार जप कर जिस तरफ मिट्टी का ढेला फेंकता है, उस दिशा के शत्रु शक्तिहोन पड़ जाते हैं, यदि अग्नि से क्षति हो रही हो तो अग्नि शान्त हो जाती है। (सर्प, बिच्छू, व्याघ्र आदि सामने नहीं आते।

१८–गायत्री के जप से कारागार से छूट सकता है, प्राणदण्ड (फांसी) की सजा छूट जाती है। घोर संकट दूर हो जाते हैं।

१९–गायत्री के जप के प्रभाव से समस्त व्याधियों से मुक्त होकर शतायु जीवन लाभ करता है। संसार के सभी कार्य पूर्ण हो सकते हैं गायत्री जप के प्रभाव से।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२०–गायत्री मन्त्र से अभिमन्त्रित जल से अभिसिंचित करने से या गायत्री मन्त्र से किये गये हवन की भस्म धारण करने से भूत प्रेतादिक बाधा नष्ट हो जाती है। आपत्तियाँ नष्ट होकर पूर्ण सुख प्राप्त होता है।

२१–रक्त पुष्पों की गायत्री मन्त्र द्वारा आहुति देने से तथा चावल का हवन करने से व बिल्व वृक्ष के फल, समिधायें तथा पत्रों, का हवन करने से धन-धान्य, लक्ष्मी, सुवर्ण, मणि, मोतो की उत्तम प्राप्ति होती है।

२२–धान के लावा घृत में मिलाकर गायत्री मन्त्र द्वारा हवन करने से कन्या की प्राप्ति होतो है। कन्या यदि विवाह योग्य हो तो पूर्व लिखित क्रम से हवन करने से सुन्दर वर की प्राति होती है।

२३–खीर का हवन गायत्री मन्त्र द्वारा यदि किया जाये तो निश्चित पुत्र होता है। गायत्री मन्त्र का जप भी होना चाहिये।

२४–कमल की आहुतियाँ गायत्री मन्त्र द्वारा देने से तथा दूर्वा, दूध, मधु, घृत से प्रतिदिन १००-१०० आहुति देने से एक सप्ताह में भयंकर रोग (मरण तुल्य कष्टद रोग) दूर होता है। तथा शमी वृक्ष की समिधा घृत में डुबो कर हवन करने से। वट वृक्ष की लकड़ो घृत में डुबोकर हवन करने से अपमृत्यु (मरण तुल्य कष्ट) दूर होकर शरीर नीरोग होता हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२५–केवल दूध पीकर गायत्री जप करने से भी मरण तुल्य कष्ट शीघ्र दूर हो जाता है एक मास में बिलकुल स्वस्थ हो जाता है।

२६–विल्व वृक्ष के नीचे बैठकर एक मास तक गायत्री जप करने से राज्य प्राप्त हो जाता है। विल्व का मूल-फल-पत्र को आहुति देने से राज्य प्राप्त होता है, लक्ष्मी प्राप्त होती है।

२७–पीपल वृक्ष की समिाओं से हवन करने से गायत्री मन्त्र द्वारा तथा मन्दार (अर्क) की समिधा से हवन करने से मुकदमा में निश्चय विजयी होता है। सर्वत्र जहाँ जाता है ऐसा व्यक्ति विजयी होता है। यशो लाभ, धन लाभ, मान प्रतिष्ठा बढ़ती है।

२८–वेंत के पत्रों की आहुति अथवा खीर की आहुति गायत्री मन्त्र द्वारा सात दिन तक करने से तथा गायत्री मन्त्र जपने से निश्चय वर्षा होती है। अथवा नाभि पर्यन्त जल में खड़े होकर गायत्री जप करने से एक सप्ताह में वृष्टि होती है।

२९–जल में गायत्री मन्त्र द्वारा भस्म की आहुति देने से घोर वृष्टि बन्द हो जाती है।

३०–फूल को घृत में मिलाकर हवन करने से गायत्री मन्त्र द्वारा तो संसार वश में होता है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३१–एक मास तक एक हजार गायत्री मन्त्र जप करने से आयु की वृद्धि होती है।

३२–पुत्र, लक्ष्मी, स्त्री, आयु, आरोग्य, विद्या, यशोलाभ, मान-प्रतिष्ठा आदि प्राप्ति के लिये ८ मास तक दैनिक एक हजार गायत्री मन्त्र का जप करने से पुत्रादि की की प्राप्ति होती है

३३–११ माला दैनिक गायत्री जप करने से द्विज की कोई भी अभिलाषा अधूरी नहीं रह सकती है, सभी पूर्ण हो सकता है।

३४–एक पैर से बिना किसी आधार से खड़े होकर हाथ उठा कर गायत्री जप करे और रात्रि में हविष्यान्न खावे तो वह पुरुष एक वर्ष में ऋषि हो जाता है। दो वर्ष ऐसा करने से उसकी वाणी सिद्ध हो जाती है अर्थात् जो कहता है वह होकर ही रहता है। तीन वर्ष तक ऐसा करने से त्रिकालदर्शी हो जाता है। चार वर्ष तक ऐसा करने से सूर्य भगवान् प्रत्यक्ष आकर दर्शन देते हैं। पाँच वर्ष तक ऐसा करने से इच्छानुसार रूप धारण करने की शक्ति होती है। सात वर्ष तक ऐसा करने से देवत्व पद प्राप्त हो सकता है। दस वर्ष तक ऐसा करने से इन्द्र पद प्राप्त कर सकता है। ११-१२ वर्ष तक ब्रह्म पद प्राप्त कर सकता है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३५–एक मास तक गायत्री मन्त्र जप करने से सुवर्ण की चोरी के पाप से मुक्त हो जाता है। गायत्री मन्त्र के प्रभाव से सुरापान–पाप से मुक्त हो जाता है। गायत्री मन्त्र जप के प्रभाव से गुरुतल्पगामित्व दोष दूर हो जाता है। ब्रह्म हत्या, गो हत्या, प्राणि हत्या, अगम्यागमन पाप अक्षम्याक्षम्य पाप, कन्या विक्रय पाप, ज्ञाताज्ञात पाप, अचोष्य चोषण पाप, असाध्य साधन पाप, असत्य वचन पाप, हजारों दुष्प्रतिग्रह पाप, अनेक जन्मार्जित पाप आदि गायत्री मन्त्र जप प्रभाव से नष्ट हो जाते हैं।

३६–गायत्री मन्त्र जप के प्रभाव से धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष, प्राप्त होता है। अष्ट सिद्धियाँ, नव निधियाँ प्राप्त हो जाती हैं।

३७-गायत्री मन्त्र जप के प्रभाव से सभी देवता प्रत्यक्ष दर्शन देते हैं। साक्षात् जगज्जननी जगदम्बा भी प्रसन्न होकर दर्शन देती हैं।

३८–गायत्री मन्त्र जप से कुण्डलिनी जाग्रत हो जाती है। सारे संसार को करामलकवत् देखने लगता है।

३९–गायत्री मन्त्र जप से भूत, भविष्य, वर्तमान काल का पूर्ण ज्ञाता हो जाता हैं।

४०–पलाश (ढाक) की समिधा से घृत में डुबोकर हवन करने से अनन्त लक्ष्मी की प्राप्ति होती है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

४१–खैर की लकड़ी या लाल चन्दन को गौ के घृत में डुबो कर हवन करने से भी अधिक लक्ष्मी प्राप्ति होती है।

४२–मालती, चम्पा, मन्दार की लकड़ी को गौ घृत में डुबो कर चन्द्र ग्रहण में हवन करने से भी लक्ष्मी की विशेष प्राप्ति होती है। गौ के घृत में केवल मन्दार की लकड़ी डुबो डुबो कर हवन करने से शीघ्र लक्ष्मी की प्राप्ति होती है तथा घर में किसी भी प्रकार भय, कष्ट, रोग आदि नहीं रहता है। सब प्रकार के कल्याण प्राप्त होते हैं।

४३–एक हजार बार गायत्री मन्त्र से अभिमन्त्रित जल के स्नान से दरिद्रता, पाप, अनेक व्याधियाँ, समस्त पाप नष्ट होते हैं। प्रतिदिन एक हजार आहुति होनी चाहिये।

४४–लोध के पुष्प का हवन गौ के घृत में मिलाकर करने से चोर, अग्नि तथा वायु से उत्पन्न होने वाले उपद्रव नहीं होते। प्रतिदिन एक हजार आहुति होनी चाहिये।

४५--गर्मी के दिनों में गायत्री मन्त्र से एक लाख भस्म की आहुति देता है तथा जल के बाहर गायत्री मन्त्र से सूर्य को अर्घ्य देता है तो गर्भपात, प्रदर, प्रसूत आदि समस्त रोग नष्ट होकर चिरञ्जीवी सन्तान उत्पन्न होती है।

४६--घृत में तिल मिलाकर अथवा जव मिलाकर अथवा केवल घृत से या पञ्चगव्य से गायत्री मन्त्र द्वारा हवन करने से सारी कामनायें पूर्ण होती हैं।

४७ -लाल सरसों का गायत्री मन्त्र द्वारा हवन करने से

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सभी शत्रु वश में हो जाते हैं।

४८--शहद में सेन्धा नमक मिलाकर गायत्री मन्त्र द्वारा हवन करने से मनुष्य वश में हो जाते हैं। दस हजार आहुति होनी चाहिए।

४९--भिलावा के तेल की गायन्त्री मन्त्र द्वारा एक लाख आहुति देने से शत्रु देश से भाग जाते हैं। इसी प्रकार नीम (निम्ब) के पत्तों की आहुति देने का भी यही परिणाम होता है।

५०--गौ का घृत, शहद मिलाकर एक लाख आहुति गायत्री मन्त्र द्वारा देने स विदेश में गया हुआ व्यक्ति घर लौट आता है।

५१--लाल चन्दन, सफेद चन्दन, कपूर, चावल, यव, लौंग, जायफल घृत, मिश्री मिलाकर आम की लकड़ी स गायत्री मन्त्र द्वारा हवन (एक लाख) करने से गायत्रीदेवी प्रसन्न होकर माता, पिता, ब्राह्मण गौ आदि का वध करने वाले को, मद्य पीन वाले को, गुरु-स्त्री में घोर पाप करने वाले को, अन्य भी अगम्या स्त्री आदि में पाप करने वाले को, सुवर्ण आदि की चोरी करने वाले को तथा अन्य समस्त पापों से मुक्त करा देती है।

५२--गायत्री महामन्त्र के जप के प्रभाव से नव ग्रहादि अरिष्ट तथा शत्रुकृत समस्त भय व उपद्रव आदि शीघ्र नष्ट हो जाते हैं।

५३--गायत्री महामन्त्र के जप से संसार में कोई भी ऐसा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कार्य नहीं है जो कि शीघ्रातिशीघ्र न हो सके।

५४--कुण्डलिनी जागरण तथा षट्चक्रवेध आदि सभी कार्य श्री गायत्री महामन्त्र के जप के प्रभाव से शीघ्र हो सकते हैं।

सङ्केत—गायत्री की महिमा का कोई भी वर्णन नहीं कर सकता है ऊपर जो प्रयोग लिखे गये हैं उनमें बहुत से प्रयोग कठिन से कठिन कार्यों में अनुभव सिद्ध हैं। वेदों में गायत्री की महिमा का अच्छी तरह वर्णन किया हैं। ब्रह्मा, वशिष्ठ, विश्वामित्र, गौतम आदि महर्षियों ने गायत्री मन्त्र के प्रभाव से ही अपूर्व शक्ति प्राप्ति की थीं। गायत्री महामन्त्र के प्रभाव से विश्वामित्र जो क्षत्रिय से ब्रह्मर्षि कहलाये अतएव गायत्री के प्रतिप्रसङ्ग में महर्षि विश्वामित्र का नाम स्थान २ में आता है। उपरिलिखित विषय श्रीमद्देवी भागवत आदि प्रमाणित ग्रन्थों से लिये गये हैं

॥ अथ प्रसङ्गवश षट्चक्र विवेचन ॥

चक्र	स्थान	दल	देवता
१– मूलाधार चक्र	गुदा के समीप	४	ब्रह्मा
२– स्वाधिष्ठान चक्र	लिङ्ग के समीप	६	विष्णु
३– मणिपूर चक्र	नाभि स्थान में	१०	रुद्र
४– अनाहत चक्र	हृदय में	१२	ईश
५– विशुद्धि चक्र	कण्ठ में	१६	सदाशिव
६– आज्ञा चक्र	भ्रूमध्य में	२	शम्भु
७– सहस्त्रार (शून्य चक्र) आदि।	ब्रह्मरन्ध्र में	१००	कामेश्वरी

तत्व	गुण	मात्रायें
१– पृथ्वी	गन्ध	व श ष स

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२–	जल	— रस	—	व भ म य र ल
३–	तेज	— रूप	—	ड ढ ण त थ द ध न प फ
४–	वायु	— स्पर्श	—	क ख ग घ ङ च छ ज झ ञ ट ठ
५–	आकाश	— शब्द	—	अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ ए ऐ ओ औ अं अः
६–	मन	— महत्	—	ह क्ष
७–	आत्मा	—	—	

सङ्केत— हठ योग में इन चक्रों के अतिरिक्त— १. चित्रकूट २. श्री हाट ३. गोल्लाट ४. औट पीठ ५. भ्रमर गुफा ६. ब्रह्मरन्ध्र चक्र और भी हैं। यह विषय महात्माओं से प्राप्त हुआ तथा शास्त्राधार भी है।

॥ इति चक्र विवेचन ॥

॥ कूर्मचक्रमिदम् ॥

ईशान क्ष ल		पूर्व क ख ग घ ङ		आग्नेय च छ ज झ ञ
उत्तर श ष स ह	अं अः ओ औ ए ऐ	अ आ ऌ ॡ	इ ई उ ऊ ऋ ॠ	दक्षिण ट ठ ड ढ ण
य र ल व वायव्य		प फ ब भ म पश्चिम		त थ द ध न नैर्ऋत्य

इस प्रकार कूर्मचक्र बनाकर जहाँ अनुष्ठान करना हो (समतल भूमि में) नाम का आदि अक्षर आ जाय वहीं कूर्म का मुख जानना चाहिये मुख स्थान में ही दीपस्थान करे। जहाँ मुख स्थान हो उसके दोनों तरफ कूर्म के हाथ जानना चाहिये। इसी प्रकार पीठ-कुक्षि दो पाद-शिर तथा पुच्छ की कल्पना करे।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सङ्केत—देवी भागवत-विश्वामित्रकल्प-गौतमसंहिता आदि ग्रन्थों में स्पष्ट है कि—

पर्वते सिन्धुतीरे वा पुण्यारण्ये नदीतटे, यदि कुर्यात् पुरश्चर्य्यान्तित्र कूर्मन्नचिन्तयेत् ।। ग्रामे वा यदि वा वास्तौ गृहे तञ्चविवर्जयेत् ।। गौ० सं० ।

पर्वत पर समुद्र तट पर पुण्य वन में, कूर्म चक्र नहीं विचारना चाहिये। गृह में तथा ग्राम में विचार करना चाहिये।

विशेष आवश्यक सङ्केत—केवल तान्त्रिक मन्त्रों में ही कूर्म-चक्र का विचार करना चाहिये। वैदिक मन्त्रों के अनुष्ठान में नहीं करना चाहिये। शान्ति कमलाकर का प्रधान मत यही है। अतएव गायत्री महामन्त्र वेदमन्त्र होने से कूर्म चक्र नहीं विचारना चाहिये।

विशेष आवश्यक वक्तव्य

आगे अनेक प्रकार के न्यास लिखे जायेंगे सभी न्यास करने पर श्री गायत्री मन्त्र जपने का समय नहीं मिल सकेगा तथा न्यास करते-करते चित्त अशांत हो सकता है अतएव साधारण न्यास करके एकान्त स्थान में सावधान चित्त से श्री गायत्री मन्त्र का जप करना चाहिये। न्यासों के चक्र में नहीं पड़ना चाहिये। यदि कोई शक्तिमान् सभी न्यास कर सके तो करे अच्छा है किन्तु न्यास न करने पर कोई भी दोष नहीं है—देवी भागवतस्कन्ध ग्यारहवें में अध्याय १६ वें में श्लोक ९२ में स्पष्ट लिखा है कि—

एतन्नयासविधिङ्केचिन्ने च्छन्तिजपतत्पराः। ततोध्यायेन् महादेवीञ्जगन्मातरमम्बिकाम् ।। अपिच ।। न्यासान्-करोतुवामावागायत्रीमेव चाभ्यसेत् । ध्यात्वा निर्व्या-जयावृत्या सच्चिदानन्दरूपिणीम् ।। देवी भागवते

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स्कन्धे ॥ १२ ॥ प्रथमाध्याये श्लोक ॥१०॥ इत्यादि प्रमाणों से स्पष्ट है कि न्यास करे या न करे जप करने से अवश्य कल्याण हो सकता है। इसी प्रकार श्री गायत्री मन्त्र के जपने के पूर्व २४ मुद्रायें प्रदर्शित करने का तथा जप के अन्त में ८ मुद्रायें प्रदर्शित करने का विधान श्री देवी भागवत आदि ग्रन्थों में है किन्तु श्री गायत्री महामन्त्र वेदचतुष्टयका मन्त्र है। मुद्रायें तान्त्रिक विधि में ही परमावश्यक हैं, बहुत से आचार्य मुद्रायें प्रदर्शित करना आवश्यक नहीं मानते हैं तथा बहुत से ग्रन्थों में मुद्रा प्रदर्शित करने का लेख भी नहीं है, अतएव मुद्रा प्रदर्शित न करने में कोई भी दोष नहीं है। यदि कोई मुद्रा प्रदर्शित करता है तो हानि भी नहीं है बहुत अच्छा है। तान्त्रिक मन्त्रों में ही मुद्रा प्रदर्शित आदि करने का विधान है।

श्री गायत्री देवी को ब्रह्मा-वशिष्ठ तथा विश्वामित्र ने शाप दिया है ऐसी कथा पुराणों में आई हैं—शाप दूर करने के लिये केवल ब्रह्मा, वशिष्ठ, विश्वामित्र, इन तीनों का स्मरण करने ही से तीनों का शाप दूर हो जाता है। देवी भागवत स्कन्ध ११ अध्याय १६ वें श्लोक सङ्ख्या ७३-७४

ब्रह्मणः स्मरणेनैव ब्रह्मशापोनिवर्तते। विश्वामित्रस्मरणतो विश्वामित्रस्यशापतः ॥ वशिष्ठस्मरणादेव तस्यशापो विनश्यति ॥ स्पष्ट लिखा है।

शारांश—श्री गायत्री महामन्त्र वेदमन्त्र है इसके जप में न्यास, मुद्रा शापोद्धार आदि यदि न भी किये जायें तो कोई दोष नहीं यदि कोई सज्जन करते हैं तो करें बहुत अच्छा है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री गायत्रीदेवी का ध्यान

ध्यानम्–मुक्ता, विद्रुम, हेम, नील, धवलच्छायै मुंखै-
स्त्रीक्षणै, युं क्तामिन्दु निवद्ध, रत्न मुकुटान्त-
त्वार्थ वर्णात्मिकाम् ।। गायत्रींवरदाम्भया-
ङ्कुश, कशां शूलङ्कपालङ् गुणंशङ्खंचक्र-
मथार विन्दयुगलं हस्तैर्वहन्तीम्भजे ।

ध्यान–जो मोती, मूंगा, स्वर्ण, नील, तथा स्वच्छ छाया वाले मुखों से सुशोभित हैं तीन नेत्रों से युक्त हैं तथा स्त्रियोचित सम्पूर्णमङ्गलों से युक्त हैं तथा रत्नजटित चन्द्रकला से जो सुशोभित हैं। जो वर्ण स्वरूप हैं तथा ब्रह्म-स्वरूपिणी हैं। जिसके हाथों में बर, अभय, अंकुश, कशा, शूल, कपाल, धनुष, शङ्ख, चक्र, तथा कमल का जोड़ा सुशोभित हो रहा है, ऐसी गायत्री देवी का मैं ध्यान करता हूं।

ॐ भूर्भुवः स्वः भगवत्यै श्री गायत्र्यैदेव्यैनमः– ध्यानं समर्पयामि हाथ में, रक्त पुष्प या रक्त चावल लेकर गायत्री देवी का ध्यान करे।

❀ ।। श्री गायत्री महामन्त्र ।। ❀

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यम्भर्गोदेवस्य धीमहिधियोयोनः प्रचोदयात् ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अथ गायत्री मन्त्र के प्रत्यक्षर के ऋषि आदि का चक्र

गायत्री के अक्षर	गायत्री अक्षरों के ऋषि	गायत्री के अक्षरों के छन्द	गायत्री अक्षरों के देवता	गायत्री के अक्षरों की शक्ति	गायत्री के अक्षरों के रंग	गायत्री के अक्षरों के तत्व	मुद्रायें
१– तत्	वामदेव	गायत्री	अग्नि	वामदेव	चम्पा	पृथ्वी	सुमुख
२– स	अत्रि	उष्णिक	प्रजापति	प्रिया	अतसीपुष्प	जल	सम्पुट
३– वि	वशिष्ठ	अनुष्टुप्	चन्द्रमा	सत्या	मूँगा	तेज	वितत
४– तु	शुक्र	वृहती	ईशान	विश्वा	स्फटिक	वायु	विस्तृत
५– वं	कण्व	पङ्क्ति	रवि	भद्रविलासिनी	कमलपुष्प	आकाश	द्विमुख
६– रे	पराशर	धृति	रवि	प्रभावती	रविवर्ण	गन्ध	त्रिमुख
७– णि	विश्वामित्र	जगती	धृति	जपा	शङ्खचन्द्र-कुक	रस	चतुर्मुख
८– यम्	कपिल	शक्वरी	मित्रावरुण	शान्ता	रक्त कमलदल	रूप	पञ्चमुख
९– भ	शौनक	अतिशक्वरी	भग	कान्ता	पद्मराग	शब्द	षणमुख
१०– र्गो	यज्ञवल्क्य	चेष्टाति	ईश्वर	दुर्गा	इन्द्रनीलमणि	स्पर्श	अधोमुख
११– दे	भरद्वाज	अतिधृति	गणेश	सरस्वती	मोती	पायु	व्यापकाञ्जलि
१२– व	जमदग्नि	विराट्	त्वाष्ट्र	विद्रुमा	कुङ्कुन	पाद	शकट

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१३– स्य	गौतम	प्रस्तार	पौष्ण	विशालेशा	काजल	हस्त	यमपाश
१४– धी	मुगद्ल	पङक्ति	इन्द्राग्नि	विमला	रक्तचन्दन	वागिन्द्रिय	ग्रथित
१५– म	वेदव्यास	कृति	वायु	तपोऽपहारिणी	वैडूर्य्य	नासिका	सन्मुखोन्मुख
१६– हि	लोमश	प्रकृति	वामदेव	सूक्ष्मा	मधु	घ्राण	प्रलम्ब
१७– धि	अगस्त्य	आकृति	मैत्रावरुणि	विश्वयोनि	कुन्ददुग्ध	जिह्वा	मुष्टिक
१८– यो	कौशिक	विकृति	विश्वदेव	जपा	हल्दी	चक्षु:	मत्स्य
१९– यो	वत्स	संस्कृति	मातृक	वशा	सूर्यकान्तमणि	त्वचा	कूर्म
२०– न:	पुलस्त्य	अक्षरपंक्ति	विष्णु	पद्मालया	सुग्गे की पूँछ	श्रोत्र	वाराहक
२१– प्र	माण्डूक	भू:	वसुगण	परा	कमल	प्राण	सिंहाकान्त
२२– चो	दुर्वासा	भुव:	रुद्र	शोभा	केतकी	अपान	महाकान्त
२३– द	नारद	स्व:	कुवेर	भद्रा	मल्लिका	व्यान	मुद्गर
२४– यात्	कश्यप	ज्योतिष्मती	अश्विनी कुमार	त्रिपदा	कनैर पुष्प	समान	पल्लव

सङ्केत—जप के अन्त में ८ मुद्रायें १- सुरभी २- ज्ञान ३- वैराग्य ४- योनि ५- कूर्म ६- पङ्कज ७- लिङ्ग ८- निर्वाण करने का विधान है। कुछ आचार्य लोग इन ८ मुद्राओं को (परोरजसेसावदोम्) यह गायत्री का चतुर्थ चरण है इस चरण के प्रतिअक्षर की एक-एक मुद्रा मानते हैं। परन्तु इसका पुष्ट प्रमाण नहीं मिला है। विचार से तो शुद्ध प्रतीत होते हैं। अनेक आचार्य्यों ने बतलाया है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भूरादिसप्तव्याहृतिव्याख्या ।

भूराद्याश्चैव सत्यन्तास्सप्तव्याहृतयस्तथा ।
लोकास्तएवसप्तैते उपर्य्युपरि संस्थिताः ॥१॥
सप्तव्याहृतयः प्रोक्ताः पुराकल्पेस्वयम्भुवा ।
तएवसप्तछन्दांसि लोकास्सप्त प्रकीर्तिताः ॥२॥

॥ भूः ॥ (१)

भवन्ति चास्मिन्भूतानि स्थावराणि चराणि च ।
तस्माद् भूरितिविज्ञेया प्रथमाव्याहृतिस्स्मृताः ॥१॥

व्याख्या—भूधातोः क्विपि भूरिति-पूर्ण इत्यर्थ । अथवा भवन्त्यस्माद् भूतानि-इतिभूरिति । अधिकरणार्थंकःक्विप् सर्वजीवोत्पादक इत्यर्थः किञ्च सकलसृष्ट्युत्पादकत्वेन भूरिति । भूतिवरवरत्वाद् भूरिति । लक्ष्मीपतित्वाद् भूरिति ।

हिन्दी भाषार्थ—जो परिपूर्ण हो वह भू इति । जिससे समस्त प्राणियों की उत्पत्ति हो वह भू इति । जो लक्ष्मी का पति हो वह भू कहलाता है । जो प्राणों का प्राण हो वह भू कहलाता है ।

॥ भुवः ॥ (२)

भवन्ति भूयो भूतानि (लोकानि) उपयोगक्षयेपुनः ।
कल्पान्तउपभोगाय भुवस्तस्मात् प्रकीर्तितः ॥२॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

व्याख्या—भावयति स्थापयति विश्वमिति भुवः । अन्तर्भावितण्यर्थादसुनिछान्दसत्वाद् गुणाभाबः ।

अथवा— भावनाज्जगदुत्पादनाद् भुवः ण्यर्थ-विशिष्ट भूधातोः कः प्रत्ययः ।

अथवा—भवत्यस्मिज्जगति भूर्महालक्ष्मीस्ततो वरो लक्ष्मीश्रेष्ठ इत्यर्थः ।

अथवा—अनन्त सुखस्वरूपत्वाद् वा भुवः, जग-दुत्पादकत्वाद्वा ।

हिन्दी भाषार्थ—जो अनन्त सुख स्वरूप हो । जो संसार को स्था-पित करे । जो संसार का उत्पादक हो वह भुवः कहलाता है । तथा जो दुःखों से मुक्त करने वाला हो वह भुवः कहलाता है ।

॥ स्वः ॥ (३)

शीतोष्णवृष्टितेजांसि जायन्ते तानि वैसदा ।
आलयः सुकृतानाञ्चस्वर्लोकस्स उदाहृतः ॥३॥

व्याख्या—स्वरितिस्वर्ग-परलोकेच-स्वश्शब्दः सुख-वाची ।

हिन्दी भाषार्थ—स्वका अर्थ स्वर्ग अथवा परलोक भी है । अथवा जो सुख स्वरूप हो । शीत-उष्ण-वृष्टि तेज जहां हो तथा पुण्यात्मा जहां हों ।

॥ महः ॥ (४)

अधरोन्तरलोकेभ्योमहाँश्च परिमाणतः ।
हृदयंसप्तलोकानां महस्तेनकथ्यते ॥४॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

व्याख्या — महपूजायाम्-अस्मद्धातोः—असुनिप्रत्यये। महः—पूज्यः-इत्यर्थः।

हिन्दी भाषार्थ—सप्तलोकों में महः यह एक लोक है। अथवा जो पूज्य हो वह मह शब्द से गृहीत होता है।

॥ जनः ॥ (५)

कल्पदाहे प्रलीनास्तु प्राणिनस्तु पुनः पुनः।
जायन्ते च पुनः स्वर्गे जनस्तेन प्रकीर्तितः ॥५॥

व्याख्या—जनजननेधातोः कर्तर्य्यसुनिप्रत्यये—जन—इति। सर्वजनकर्ता। सकलजननकर्तृत्वाज्जनः।

हिन्दी भाषार्थ—कल्पान्त में दग्ध होने से जो प्राणी पुनः-पुनः स्वर्ग में उत्पन्न हों अतएव उसको जन कहते हैं अथवा सकल जन का जो कर्ता हो वह जन कहलात है।

॥ तपः ॥ (६)

सनकाद्यास्तपस्सिद्धा ये चान्ये ब्रह्मणःसुताः।
अधिकारनिवृत्तास्तु तिष्ठन्त्यस्मिन्तपस्ततः ॥६॥

व्याख्या—तत आलोचनेऽस्माद् धातो रसुनि—प्रत्यये—तप इति सर्वविषयकालोचनकर्तृत्वात्तपः। आलोचनकर्ता।

हिन्दी भाषार्थ—जिस लोक में सनकादि ऋषीश्वर अधिकार निवृहोकर रहते हैं वह तपलोक है।

सत्यम् (७)

सत्यन्तु सप्तलोकावै ब्रह्मणस्सदनन्ततः।
सर्वेषाञ्चैव लोकानाम्मूर्ध्निसन्तिष्ठते सदा ॥७॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ज्ञानकर्मप्रतिष्ठानान्तथा सत्यस्यभाषणात् ।
प्राप्यते चोपभोगार्थम्प्राप्यन्न च्यवते पुनः ॥८॥
तत्सत्यं सप्तमोलोकस्तस्मादूर्ध्वंन्न विद्यते ।

व्याख्या—उत्तमज्ञानानन्दरूपत्वात् सत्यम् ।

अथवा—कालत्रयाऽवाध्यत्वं सत्वत्वम् ।

हिन्दी भाषार्थ—ब्रह्मा जी का लोक का नाम सत्यलोक है जहां सभी सत्य बोलते हैं। उस लोक से ऊपर लोक नहीं है। जहां उत्तम ज्ञान तथा आनन्द रूप होने से सत्य कहते हैं। तीनों काल में भी जहां सत्य का वाध नहीं होता है वह सत्य लोक है।

ओमिति

व्याख्या—सिद्धानाञ्चैवसर्वेषाम्वेदवेदान्तयोस्तथा ।
अन्येषामपिशास्त्राणान्निष्ठाप्योङ्कारउच्यते ॥१॥
प्रणवाद्यायतोवेदाः प्रणवेपर्य्युपस्थिताः । वाङ्मयः प्रणवः सर्वस्तस्मात् प्रणवमभ्यसेत् ।

व्याख्या—अवधातुगतिकर्मा-प्रवेशकर्माचअव्यतेप्रविश्यते गुणैरितिओम् अथवा अवति प्रविशतिगुणानिति ओम् ।

अवधातोर्मन् प्रत्पये "अवनष्टिलोपः" इत्यनेनोणादिसूत्रेण टिलोपे सति "ज्वरत्वर०" इत्यादि कृदन्त-सूत्रेण वकारस्यऊठि संजाते सति "आद्गुणः" इति-सूत्रेण गुणेसति 'ओम्' इति सिद्ध्यति । अवति-रक्षति । जानाति-गच्छति व्याप्नोति । प्रकाशयति ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रीणयति । वर्द्धयति । लीनङ्करोति । ददाति । हिंसति । आलिङ्गयति । प्रदर्शयति । दीप्यति । इच्छति । चालयति । पाचयति । तर्पयति । इत्याद योऽनेकेऽर्थाःसन्ति ।

हिन्दी भावार्थ—ॐ यह प्रणव है प्रत्येक मन्त्र का सेतु है अर्थात् जैसे अथाह नदी को पुल से पार करने में कठिनता नहीं होती है इसी प्रकार ॐ इस प्रणव के सहित मन्त्र जपने से मन्त्रों की कठिनता शीघ्र दूर हो जाती है। ॐ ब्रह्म है ब्रह्म की महाशक्ति ही त्रिपदी गायत्री है। एक एक पाद में विशेष रहस्य भरे हैं। तीन वेद, तीन देवता, तीन काल आदि का पूर्ण रहस्य त्रिपदा गायत्री में है। नाद-विन्दु और कला की त्रिपुटी भी तीनों पादों में स्थित हैं। प्रत्येक सम्प्रदाय वाले अपने-अपने मतानुसार तीनों का सम्मेलन करके अत्यानन्द को प्राप्त होते हैं। ॐ की उपासना ही परब्रह्म की उपासना है ॐ के बिना मन्त्र में शक्ति ही नहीं आ सकती है। ॐ का अर्थ है जो संसार से पार करे। जो संसार को अपने में लीन करे। जो अनेक सुख प्रदान करे। जो काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर आदि को नाश करे जो उपासक को अपने से सम्बन्धित करे। जो आत्मदर्शन करावे। जो प्रकाश से अज्ञान नष्ट करे। जो प्राणियों को सन्मार्ग में लगावे। जो संसार का चालक है जो सर्वज्ञ है। जो रक्षक है। जो प्रकाशक है। जो आनन्द स्वरूप है जो सर्वज्ञ है। जो निराकार है। जो समस्त चराचर का आधार है। इत्यादि ॐ के अनेक अर्थ हैं।

ओम्—यह अव्यय वाचक पद है, तीनों काल में तीनों लिङ्गों में सभी विभक्तियों में सदा एक सा रहने वाला है इसमें किसी प्रकार का विकार नहीं हो सकता है। अतएव विकारी के साथ उसका प्रयोग नहीं होता है, केवल परमात्मा आदि में युक्त होता है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गायत्री व्याख्या शास्त्राधारे

१–तत्–शब्देन प्रत्यग्भूतं स्वतः सिद्धम्परब्रह्मोच्यते । 'शङ्करभाष्यम्' ।। तदिति अव्ययपदं परोक्षार्थे, इतिसन्ध्याभाष्यम् ।

२–सविता—षूञ्, प्राणिप्रसवे धातोरिदं रूपम्, सुनोति, सूयते वा चराचरञ्जगत् । सूर्यमण्डलान्तर्गतपुरुषः ईश्वरस्तस्यसवितुरिति (भरद्वाजभाष्यम्) ।

३–वृञ् धातोः प्रार्थनायाम्—एण्यप्रत्यये कृतेवरेण्यमिति । अतिश्रेष्ठमित्यर्थः । वरेण्यम्—आश्रयणीयम् ।। वरेण्यम्—अभेदगम्यम् । सेव्यम् । सर्ववरणीयम् निरतिशयामन्दरूपम् । इत्यनेक आचार्याः ।

४–भर्गः–भेतिभासयतेलोकान् रेतिरञ्जयतेप्रजाः ।।
गइत्यागच्छतेऽजस्रम्भरगाद्भर्ग उच्यते ।।
भ्रस्ज-पाके-इतिधातोः-असुन भर्ग इतिरूपम् (गृह्यपरिशिष्टे) ।

भर्जन्ति पापानिसंसारजन्ममरणादिदुःखमूलानियेन असौभर्गः (शं० भा०) भञ्जो-आमर्दने । भृजीभर्जने । भ्राजृदीप्तौ । इतिधातूनांरूपम् (भारद्वाजः) ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

५–देवस्य-क्रीडा विजिगीषा व्यवहार द्युति-स्तुति-इत्याद्यर्थकदिवुधातोः पचाद्यच्-इत्यनेनाच् प्रत्यये-रूपम्। दीव्यति प्रकाशते चराचरञ्जगत्सदेवः प्रकाशः सर्व-द्योतनात्मकाखण्डचिदेकरसम् (शं० भाष्यम्) दीव्यति-प्रकाशयति। क्रीडति-नन्दयति। इत्यनेकआचार्याः। तस्यदेवस्य

६– धीमहि-धीङ्आधारे-ध्यैचिन्तापाम्-वा-लिङ्लकारे "बहुलंछन्दसि" सूत्रेण सिद्धम्। वयन्ध्या-येम्-ध्येयतया मनसाधारयेम् वा वयम्।

७–धीशब्दोवुद्धिवचनः, कर्मवचनो वाग्वचनश्च। (सायणभाष्यम्) धियोधरणवत्योवुद्धयः। (विष्णु-भाष्यम्)।

८–यः–अत्र लिङ्गव्यत्ययः यद्भर्गः। यः भर्गोवा (सायण-महीधर भाष्यम्) यःशब्दश्च यदित्यर्थे लिङ्गव्यत्ययतोभवेत् (भारद्वाज-उव्बटभा०) यः-सविता (सायण-भहीधरभाष्यम्)। यत्सत्यज्ञानादि-लक्षणम् (विद्यारण्यस्वामी)।

९–नः–नः–अस्मदीयाः। नः–अस्माकम्। (साय-णभाष्यम्)।

१०–प्रचोदयात्–प्रेरयेत्। धमार्थकाममोक्षेऽस्म-दादीनाँवुद्धिं प्रेरयेत्–योजयेत्।

इतिसङ्क्षेपतो व्याख्या।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

।। गायत्र्यर्थः ।।

यत् सवितुर्देवस्य वरेण्यमस्माभिर्ध्येयम्-भर्गो जपताम्पापभञ्जन हेतु भूतम् । धीमह्यु पास्महे, तत्ते-जोनोऽस्माकन्धियो, वुद्धीः श्रेयस्करेषु कर्मषु प्रचोद-यात्, प्रेरयेदित्यर्थः ।

विशेषः– तत्तस्यसवितुर्जगदुत्पादयितुः सर्वान्त-र्यामिणस्सूर्यस्य वरेण्यं वरणीयमतिश्रेष्ठमिति भावः । भर्गस्तेजः, देवस्य, द्योतनात्मकस्य दीप्यमानस्येत्यर्थः । धीमहि वयन्ध्यायामः–चिन्तयामः, धियोधर्मादि विष-यिणीर्वुद्धीः यस्सविता नः अस्माकम् प्रचोदयात् प्रेर-येत् । तत्रापिसरलार्थः– यस्सविता–प्रेरयिता । नः– अस्माकम् । धियः–धर्मादिविषयेबुद्धीः । प्रचोदयात् । तत्तस्यसवितुः–प्रेरयतुः सूर्याख्यस्य ब्रह्मणः । देवस्य– दीप्यमानस्य वरेण्यम्, वरणीयम् । भजनीयमिति ! भूरादिसप्तलोकप्रकाशकम् । आपस्वरूपञ्ज्योतिस-स्वरूपम्, रस आनन्दस्वरूपम्, अमृतम्योक्षरूपम्ब्रह्म भूभुर्वःस्वरूपम्, ओङ्कारस्वरूपञ्च भर्गस्तेजोधीमहि ध्यायामः । "गायान्–प्राणान् त्रायत इति"

।। गायत्री का अर्थ हिन्दी भाषा में ।।

ओम्–ईश्वर का प्रधान नाम है । भूः–जो प्राणों का प्राण है । भुवः–जो सब दुःखों से मुक्त करने वाला है । स्वः–

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जो सुख स्वरूप है। जिस परब्रह्म के ध्यान करने से परम-सुख प्राप्त होता है। सवितुः-सवस्थावर जङ्गम संसार को उत्पन्न करने वाला। देवस्य-जो सब सुख व कामनाओं को देने वाला है। वरेण्यम्-मानने योग्य। भर्गः-शुद्ध स्वरूप। तत्-उस पर ब्रह्म परमात्मा को। धीमहि-ध्यान करें। यः-जो सविता देव ईश्वर। नः-हमारी धियः-बुद्धि को। प्रचोदयात्-अच्छे कर्मों में प्रेरित करे।

॥ सरल अर्थ ॥

हम लोग उस पर ब्रह्म परमात्मा का ध्यान करते हैं जो प्राणों का भी प्राण है जो सब दुखों से मुक्त करने वाला है, जो सुख स्वरूप है, जिस ईश्वर के ध्यान से परम सुख प्राप्त होता है ; जो चराचर ब्रह्माण्ड को उत्पन्न करने वाला है, जो मानने योग्य है, जो शुद्ध स्वरूप परब्रह्म परमात्मा है वह सविता देव ईश्वर हमारी बुद्धि को अच्छे कामों में प्रेरित करे (लगावे)—

सङ्केत—शाङ्कर भाष्य में गायत्री विवेचन सुचारु रीति से किया है उन्होंने यहाँ तक लिखा है कि गायत्री मन्त्र में चौबीस अक्षर हैं। प्रति अक्षर के क्रम से श्री वाल्मीकीयरामायण में चौबीस हजार श्लोक समाप्त किये हैं अर्थात्- तपःस्वाध्याय निरतन्तपस्वीवाग् विदांवरम्, यहां आरम्भ में ही (त) गायत्री के प्रथमाक्षर का प्रयोग किया है। सहस्त्र श्लोक के बाद पुनः दूसरे अक्षर (स) का प्रयोग किया है। इसी प्रकार श्री वाल्मीकीयरामायण की समाप्ति में अर्थात् चौबीस सहस्त्र समाप्ति में यात् (य) का प्रयोग किया है। पूरे चौबीस अक्षर समाप्त करके गायत्री का रहस्य वर्णन किया है। चौबीस अवतार भी महामन्त्र गायत्री के अनुसार ही माने हैं। विष्णु गायत्री भी चौबीस अक्षर की है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

महीधरभाष्य तथा सायणभाष्य उव्वटभाष्य आचार्य्य रावण भाष्य आदि में भी गायत्री महामन्त्र के अर्थ पर अच्छा विवेचन किया है। तथा भरद्वाज, अगस्त्य, भट्टोजीदीक्षित, वरदराज आदि आचार्यों ने भी अच्छा विवेचन किया है। बृहदारण्यक उपनिषत् में अर्थ का विवेचन अच्छा किया है। सन्त महात्माओं ने अच्छे प्रकार से अर्थ किये हैं। ४० प्रकार के गायत्री महामन्त्र के अर्थ सुनने तथा प्रकाशित देखने में आये हैं- विशेषता अर्थ भेद की केवल बुद्धि वैभव ही समझ में आया है। केवल श्री गायत्रीमहामन्त्र के पदों को आगे पीछे करके तथा देवता भेद से अर्थ भेद किये हैं। सभी अर्थ मान्य हैं तथा सप्रमाण हैं किन्तु किसी एक अर्थ का ही चिन्तन करते हुये जपादि कर्म करना चाहिए। जिस ऋषि ने जिस अर्थ पर चिन्तन किया है वही अर्थ उस ऋषि का प्रधान रहा है।

गायत्री नाम का छन्द होने से गायत्री नाम है। शाक्तलोग श्री गायत्री की शक्ति रूप से उपासना करते हैं। शैव लोग इसकी उपासना शिवरूप से करते हैं। वैष्णव लोग विष्णुरूप से उपासना करते हैं। त्यागी सन्यासी आदि गायत्री का ध्यान निरवच्छिन्न सर्वस्वरूपात्मक ब्रह्म मानकर हृदयाकाश में करते हैं। इसी प्रकार अपने २ स्वाभीष्ट देवानुसार अर्थ मानकर सभी लोग ध्यानादि करते हैं, अतएव अर्थ में भी भेद होना स्वाभाविक है।

ब्रह्मचारी नीचे क्रम से तीन प्रणव लगाकर जपें। ओम् भूर्भुवः स्वः ओन्तत्सवितुर्वरेण्यम्भर्गो देवस्य-धीमहिधियोयो नः प्रचोदयात्-ओम्। इत्याकारः।

गृहस्थाश्रम वाले दो प्रणव लगाकर जपें। ॐ भूर्भुवःस्वः तत्सवितुर्वरेण्यम्भर्गो देवस्यधीमहिधियो-योनःप्रचोदयात् ॐ। इत्याकारः।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

त्यागियों के लिये एक प्रणव का क्रम है। ॐ भू भुंवः स्वस्तत्सवितुर्वरेण्यम्भर्गोदेवस्धीमहिधियो-योनः प्रचोदयात्। इत्याकारः।

अजपागायत्रीस्वरूप

ॐ "सोहमस्मि" इयमेवहिपरमहंसमहात्मभि-स्सदा ध्यायते मोक्षाखण्डपदार्थोलभ्यते निर्वाणधारा तरङ्गोऽप्यस्यामेवगायत्र्याम्—इति।

पञ्चप्रणवयुक्तगायत्री

ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं ॐ भर्गोदेवस्य धीमहि ॐ धियोयोनः प्रचोदयात् ॐ।

इस प्रकार जपने से अनन्त फल प्राप्त होता है। तीनपाद क्रमशः पृथक् करके जपना चाहिये। यथा—प्रथमपाद – वरेण्यम्पर्यन्त। द्वितीयपाद – धीमहि पर्यन्त। तृतीयपाद–प्रचोदयात्पर्यन्त। इसप्रकार पृथक् जपने से भी अनन्त फल प्राप्त होता।

व्याहृतिगायत्री—भूर्भुवः स्वः महः जनः तपः सत्यम्। १२ अक्षर की है।

त्रिपदागायत्री—यही गायत्री मन्त्र है। तत्स-वितुर्वरेण्यम्भर्गोदेवस्यधीमहिधियोयोनः प्रचोदयात्। यहां वेरणियम्–ऐसी योजना से २४ अक्षर होते हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

यही प्रधान ब्रह्म गायत्री है। यहां तीन पाद हैं—चतुर्थपाद (परोरजसेसावदोम्) ऐसा है। बहुत से आचार्य्य पिङ्गल आदि ग्रन्थानुसार, चौबीस अक्षरों में ही ६–६ अक्षर का एक-एक चरण मानकर—छन्द गणना शुद्ध मानते हैं। यदि कहीं छन्द में अक्षर पूर्ति न होती हो तो वहाँ "तैद्वैदिकन्नितृच्छन्दोमृत्युञ्जयतुर्यथा" इति प्रमाण से नितृचनामका छन्द जानना चाहिये। पिङ्गल सूत्र "इत्यादि पूरणः" इस प्रमाण से 'वेण्यम्' यहां पर 'वरेणियम्' ऐसा होने से चौबीस अक्षर वाली गायत्री सिद्ध होती है—अर्थात् जहां अक्षर पूर्ति न होती हो वहां 'इयादिपूरणः' इससे यकार को इय्, सहित मानना चाहिये। इसी प्रकार जहां कहीं वकार हो वहां 'उव् सहित मानना चाहिये। अतएव 'वरेणियम्' यह वाक्य सिद्ध हो गया।

ऊँतत्सवितुर्वरेणियम्भर्गोदेवस्यधीमहिधियोयोनः प्रचोदयात्—ऐसा मन्त्र जपना चाहिये अन्यथा ब्रह्मघाती होता है 'वरेणियम्' कहना चाहिये जप काल में। पाठकालेवरेण्यंस्याज्जपकालेवरेणियम् । वरेण्यमितियोब्रूयात् सनरो ब्रह्म घातकः ॥ इतिब्रह्मपुराण वाक्य से जपकाल में वरेणियम्, होना चाहिये। यद्यपि श्री

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गायत्री महामन्त्र जपने में आचार्य्यों ने अनेक प्रकार के विधान बतलाये हैं—कहीं दो प्रणव लगाकर जप करे। कहीं प्रथम अनुलोम जप करे बाद में विलोम करे। कहीं 'रम्' इस वीज को आदि तथा अन्त में लगा कर जप करे। इत्यादि अनेक विधि से जप करने के नियम बतलाये हैं। वशिष्ठ संहिता आदि ग्रन्थों में 'ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यम् भर्गो देवस्य धीमहि्धियोयोनः प्रचोदयात्, इसी प्रकार जपने का विशेष महत्व है। तथापि जिसको जैसे मन्त्र पर अपने-अपने श्री गुरुदेव के कथनानुसार विश्वास हो वही जप करे। वस्तुतः—ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यम्भर्गोदेवस्यधीमहि धियोयोनः प्रचोदपात् ॐ" यही स्वरूप महामन्त्र का है इसी प्रकार जप करने से सकल कल्याण प्राप्त हो सकते हैं, इस प्रकार का मन्त्र जपा जाये इस पर अनेक आचार्यों की शास्त्रानुसार सम्मति है। अथवा जैसा आचार्य उपदेश करें वैसा जपे।

।। गायत्री पुरुष है या स्त्री ।।

"आगच्छवरदे देवित्र्यक्षरे ब्रह्मवदिनी" "गायत्री वेद–जननी गायत्री पापनाशिनी" "गायत्री वेद मातरम्" इत्यादि प्रमाणों से गायत्री स्त्री सिद्ध होती है ऐसी शङ्का नहीं करनी चाहिये "छान्दोग्योपनिषत्–में "गायत्री वाइदं सर्वं भूतं यदिदं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

किञ्चवाग् वैगायत्री वाग्वा इदं सर्वंभूतं गायति च त्रायते चेति" तथा च अथर्ववेद में "अथत्वं पुमानसि अथवा कुमारी अथवा कुमारः सर्वशक्तिमानिति" "तस्यभासा सर्वमिदं विभातीति" इत्यादि अनेक प्रमाणों से गायत्री पुरुष निर्विवाद है। स्त्री-लिङ्गदर्शन तो लिङ्गानुशासन कोशादिवल से है। गायत्री नाम का छन्द है। दारशब्द स्त्री होते हुये तथा स्त्रीलक्षण भी होते हुये पुरुष न होने पर भी पुल्लिग बन जाता है। स्त्रीलक्षण चिह्न न होते हुये भी अचेतन खट्वा शब्द में स्त्रीत्व सिद्ध होता है अतएव लिंग दर्शन से गायत्री में स्त्रीत्व नहीं मानना चाहिए किन्तु ब्रह्मरूप होने से सभी लिंग मानने चाहिए। वस्तुतः निर्विवाद परब्रह्म है, स्त्री के भ्रम में नहीं पड़ना चाहिए। ॐअग्निर्देवता वातोदेवता सूर्योदेवता चन्द्रमा देवता इत्यादि वेदमन्त्र से स्पष्ट है कि देवताओं में लिङ्ग प्रमाण नहीं मानना चाहिए। अन्यथा यहाँ कठिनता होगी सभी स्त्री लिङ्ग में हैं। सूर्य, चन्द्र, अग्नि, वायु, विश्वेदेवा-वृहस्पति वरुण आदि।

शैव लोग गायत्री को शिव रूप से। वैष्णव लोग विष्णु रूप से। शाक्तजन शक्तिरूप से तथा अन्यान्य उपासक भी अपने २ स्वाभीष्टानुसार ध्यानादि करते है। सवितुः- इसका सूर्य ही अर्थ है यह नहीं मानना चाहिये। इसके अनेक अर्थ हैं। सविता- अर्थात् स्थावर जंगम को उत्पन्न करने वाला अथवा अन्तर्यामी आदि अनेक अर्थ विद्वान् शास्त्रानुसार करते हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जहाँ एक या तीन या पाँच मुख वाली गायत्री में स्त्री रूप का वर्णन आता है वहाँ महाशक्ति का स्वरूप जानना चाहिए। उपासकों के विश्वास पर अनेक रूप धारण करने वाला ब्रह्म कभी पुरुष कभी स्त्री कुमार युवा आदि बन जाता है। यही पूर्ण निर्णय है विद्वद्वृन्द जो निर्णय करें वह भी सर्वथा मान्य होगा। गायत्री छन्द वेद में अनेक प्रकार के हैं किन्तु गायत्री शब्द पङ्कज (कमल) शब्द की तरह योग रूढ़ होने से गायत्री महामन्त्र जो कि चौबीस अक्षरों वाला है उसी का ही बोधक है अन्य मन्त्रों का बोधक नहीं है।

तन्त्र शास्त्र में भी अनेक प्रकार की गायत्रीं हैं किन्तु वैदिक गायत्री एक ही है—अनेक प्रकार की नहीं है चूडागायत्री-आपोज्योतीरसोऽमृतं ब्रह्मभूर्भुवःस्वः। १४ अक्षर हैं। व्याहृतिगायत्री—ॐभूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यम्।

यह सप्तप्रणव वाली गायत्री में १९ अक्षर हैं। शताक्षर—एवम्—षष्ट्यक्षर आदि अनेक प्रकार की गायत्रीं हैं किन्तु इनमें भी आचार्य्यों के मत से भिन्न-भिन्न क्रम हैं।

गायत्री महामन्त्र का उद्धार—प्रणवम्पूर्वमुच्चार्य्यंभूर्भुवस्स्वस्ततःपरम्। गायत्रीम्प्रणवञ्चान्तेजपएष उदाहृतः।

अर्थात्—ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यम्भर्गो देवस्य धीमहिधियो योनः प्रचोदयात् ॐ। यह महा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मन्त्र है। "वरेण्यम्" यहां वरेणियम् पृथक् करके जप करना चाहिये।

यन्त्रोद्धार:आदौत्रिकोणंविन्यस्य षटकोणन् तद्व-हिर्न्यसेत्। वृत्तञ्चाष्टदलम्पद्मन्तद्वहिश्चतुरस्रकम्। चतुर्द्वारुंसमायुक्तङ्गायत्रीयन्त्रमीरितम्।
सङ्केत–यन्त्रोद्धार में मतभेद है।

॥ मालासंस्कार ॥

पिप्पल वृक्ष के नव पत्रों को पद्माकार रखकर उस पर माला स्थापित करके संस्कार करे।

(१) ॐ सद्योजातम्प्रपद्यामि सद्योजाताय वैनमोनमः।
भवे भवे नातिभवे भवस्य माम्भवोद्भवायनमः॥

इस मन्त्र से माला को पञ्चगव्य आदि से स्नान कराना चाहिए।

(२) पुन:– ॐ वामदेवायनमो ज्येष्ठायनमः श्रेष्ठाय-नमो रुद्रायनमः। कालायनमः कलविकरणायनमो वलविकर-णायनमो वलायनमो वलप्रमथनायनमः सर्वभूतदमनायनमो मनोन्मनायनमः।

इस मन्त्र से चन्द्रनादि से लेपादि करना चाहिए।

पश्चात् (३) अघोरेभ्योथघोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः। सर्वेभ्यः सर्वसर्वेभ्योनमस्ते, अस्तुरुद्ररूपेभ्यः।

इस मन्त्र से धूप देना चाहिये।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पश्चात् (४) ॐ तत्पुरुषायविद् महे महादेवाय धीमहि। तन्नो रुद्रः प्रचोदयात् ।

इस मन्त्र से सुगन्धित वस्तुओं का लेप करना चाहिये ।

पश्चात् (५) ॐ ईशानः सर्व विधानामीश्वरः सर्वभूतानाम् । ब्रह्माऽधिपतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्रह्माशिवो मे अस्तु सदा शिवोम् ।

इस मन्त्र से सौ २ बार माला को अभिमन्त्रित करे ।

इसी मन्त्र से मेरु को भी अभिमन्त्रित करे ।

पुनः गायत्री आदि जिस मन्त्र का जप करना हो उस मन्त्र से अभिमन्त्रित करे ।

सङ्केत– माला में भी प्राण प्रतिष्ठादि समस्त संस्कार होते हैं । अति संक्षेप से प्राण प्रतिष्ठा क्रम लिखा जा रहा है । विद्वज्जन जितना विस्तार चाहें करलें–

ॐ ह्रीं अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं ॡं एं ऐं ओं औं अं अः कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं बं भं मं यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं- इतना कहकर पीपल के नव पत्रों पर स्थापित माला का विन्यास करके प्राण प्रतिष्ठा करे– यथा-ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं हंसः सोऽहम् अस्यामालायाः प्राणा इहप्राणाः ।। ॐ आँ ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं स हं ळं क्षं हंसः सोहम् अस्यामालाया जीवइहस्थितः ।। ॐ आँ ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं क्षं हंसः सोहम् अस्यामालायाः सर्वेन्द्रियाणिवाङ्मनस्त्वक्चक्षुः श्रोत्र जिह्वाघ्राणपाणिपादपायूपस्थानि इहैवागत्य सुखञ्चिर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

न्तिष्ठन्तु स्वाहा ।। ॐ मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य वृहस्पति र्यज्ञमिमन्तनो त्वरिष्टं यज्ञंर्ठसमिमन्द धातु ।। विश्वेदेवासइह-मादयन्तामों३ प्रतिष्ठ ।। इत्यादि मन्त्र से प्राण प्रतिष्ठा करके विधिवत् पूजन करे। पश्चात् माला को प्रार्थना करे- ॐ माँ माले महामाये सर्वशक्तिस्वरूपिणी ।। चतुर्वगस्त्वयिन्य-स्तस्मान्मेसिद्धिदाभव ।। ॐअविघ्नङ् कुरुमालेत्वंगृह्णामि दक्षिणे करे। जपकालेच सिद्ध्यर्थम्प्रसीदममसिद्धये ।।

ॐ अक्षमालाधिपतये सुसिद्धिन्देहि२ सर्व मन्त्रार्थ साधिनिसाधय२ सर्वसिद्धिं परिकल्पय२ मे स्वाहा। इतना कहकर माला की प्रार्थना करे। प्रत्येक जप में माला को वस्त्र आदि से आच्छादित करके जप करना चाहिए। जप के बाद माला को सिर पर रखकर प्राणायाम करके साधारण न्यास करके विसर्जन करे, मन्त्र- ॐ त्वम्माले सर्वदेवानाम्प्री-तिदाशुभदाभव ।। शिवङ्कुरुष्वमे भद्रे यशोवीर्यञ्च सर्वदा ।। इति साधारण माला संस्कार ।।

दीपक का पूजनादि करके दीपक को अनुष्ठान आदि कर्म का साक्षी भूत बना करके जप आदि कार्य आरम्भ करना चाहिए।

।। भूतशुद्धि विवेचन-अतिसङ्क्षेपसे ।।

स्नानादि कर्म के पश्चात् शुद्धवस्त्र धारण करके भस्म लगाकर रूद्राक्ष धारण करके पृथ्वी, जल, अग्नि, आकाश, वायु की शुद्धि करे-

यथा- प्रथम मूलाधार से सुषुम्ना मार्ग के आश्रय से ब्रह्मरन्ध्र तक जो नाडी गई है वही कुण्डलिनी है उसे कुम्भकप्राणा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

याम द्वारा जाग्रत करे। अथवा उसका चिन्तवन करे। पश्चात् हंस मन्त्र द्वारा जीवात्मा और परमात्मा का एकीभाव करे। पश्चात् 'लं' यह वीज मन्त्र वाली पृथ्वी मण्डल का ध्यान करे। पश्चात् वं वीज वालेजल काध्यानकरे। पश्चात्'रं'वीज वालेअग्नि मण्डल का ध्यान करे। पश्चात् 'यं' वीज वाले वायु मण्डल का ध्यान करे। पश्चात् 'हं'वीज वाले आकाशमण्डल का ध्यान करे।

पश्चात्– पृथ्वी को जल में, जल को अग्नि में, अग्नि को वायु में, वायु को आकाश में, आकाश को अहंकार में, अहंकार को महत्तत्व नें, महत्तत्व को प्रकृति में, प्रकृति को आत्मा में, लय करे इतना होने पर साधक स्वयं ज्ञानस्वरूप बन जाता है। पश्चात् शुद्ध होने पर अपने शरीर के अन्दर स्थित 'पाप पुरुष' का ध्यान करे। जो पाप पुरुष काले रङ्ग वाला अंगूठे के प्रमाण का है पाप पुरुष अनेक प्रकार के पापों का सञ्चयरूप है वह नोचे मुख किये रहता है बड़ा भयानक है उस पाप पुरुष को पूरक प्राणायाम करते समय 'यं' वीज का स्मरण करे। पश्चात् कुम्भक प्राणायाम करते समय भी 'यं' वींज का ही ध्यान करे तो वायु भरने से वह पाप पुरुष सूख जायगा। पश्चात् 'रं' इस अग्नि वीज का ध्यान करने से पाप पुरुष को जला देवे। पश्चात्–रेचक प्रणायाम से वायु वीज 'यं' का ध्यान करते हुये दाहिने नाक के छिद्र से उसे बाहर निकाल देवे। पश्चात् अमृत वीज 'वं' के उच्चारण करने से वह पाप पुरुष की भस्म अमृत के कारण द्रवीभूत स्वर्ण का पिण्डाकार बन गया ऐसी कल्पना करे। पश्चात्

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'हं' इस आकाश वीज के उच्चारण से वह अण्डा स्वच्छ शीशे के समान कल्पना करे। पश्चात् पञ्चभूतों के लय क्रम के समान–आकाश, वायु, अग्नि, जल, पृथ्वी को क्रमशः ब्रह्म से उत्पन्न करके यथा स्थान स्थापित करे। पश्चात् सोऽहम्, इस मन्त्र से जीवात्मा को परमात्मा से पृथक कल्पना करके जीवात्मा को हृदय कमल में स्थापित करे। अर्थात् कुण्डलिनी और परमात्मा के सम्पर्क से अमृतमय बने हुये जीवात्मा को पृथक करके हृदय कमल में स्थापित करके मूलाधार में लौट जाती है। पश्चात् शक्ति का ध्यान करे।

सङ्केत–– यह भूत शुद्धि का विवेचन अति संक्षेप से संकेत मात्र दिग्दर्शन करा दिया गया है। हर एक साधक को बिना गुरुदेव जी की कृपा से यह सब अति गुप्त रहस्य विषय समझ में नहीं आ सकते हैं। अतः इन सब का अनुभव गुरुदेव के शरण में जाकर हो करना चाहिये यह सब विषय कठिन हैं बिना किसी से समझे स्वयं करने से हानि होने की संभावना हो सकती है। यह सब विषय प्रत्यक्ष में ही समझने के हैं।

। इतिभूतशुद्धि विवेचन ।

इतिप्रथमभागः समाप्तः ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अथ श्रीगायत्रीमहामन्त्र के अनुष्ठान विधान प्रारम्भ

साधक (गायत्री कापुरश्‍ चरण करने वाला) ब्राह्ममुहूर्त में उठकर शौच आदि क्रिया को शास्त्रविधि के अनुकूल कर नदी–तालाव–या कूपादि में स्नानकर तीन बार प्राणायाम करके सन्ध्योपासन कर्म सूर्य के अर्घ्य पर्यन्त कर पश्चात् गायत्रीं के पुरश्चरण के क्रमानुसार न्यासादि तथा पूजन आदि कृत्य करे। यह सब विवरण क्रमशः लिखा जाएगा।

प्राणायाम—ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यं ॐ तत्सवितुर्वरेण्यम्भर्गो देवस्य धीमहिधियोयोनः प्रचोदयात्। आपो-ज्योतीरसोऽमृतंब्रह्म भूर्भुवः स्वरोम् ॥

यहां से आगे न्यास वर्णन होंगे–अन्तर्मात्टिकान्यास–वहिर्मात्टिकान्यास सृष्टिक्रमन्यास–शक्तिकलान्यास–आदि करके आगे प्रणव आदिन्पास करे। अथवा–अन्तर्मात्टिकान्यास तथा वहिर्मातृका–न्यासकर–प्रणवादि न्यास करे–सृष्टिक्रमन्पासादि–मध्यमें या पीठन्यास के पूर्व करे।

॥ अथप्रणवन्यासः १ ॥

प्रणवस्य ब्रह्माऋषिः। गायत्री छन्दः। परमात्मा देवता। शरीरशुद्ध्यर्थेजपेविनियोगः। ॐ ब्रह्मऋषये नमः शिरसि ॐगायत्रीच्छन्दसे नमः मुखे। ॐ पर–मात्मदेवतायै नमः हृदये इति प्रणवन्यासः

यहाँ दाहिने हाथ में जल लेकर प्रणवस्यं ब्रह्माऋषिः। गायत्रीच्छन्दः। परमात्मादेवता शरीरशुद्ध्यर्थें विनियोगः। इतना पढ़कर जल को पृथ्वी पर रक्खे हुये किसी पात्र में विनियोग काजल छोड़देवे ! पात्र का अभाव हो तो पृथ्वी पर ही जल गिरा देवे।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ॐ ब्रह्मऋषयेनमः नमः शिरसि = इससे शिर का स्पर्श करे
ॐ गायत्रीच्छन्दसे नमः मुखे = इससे मुख का स्पर्श करे
ॐपरमात्मदेवतायैनमः-हृदये = इससे हृदय का स्पर्श करे

॥ अथ व्याहृतिऋष्यादिन्यासः ॥२॥

प्रणव स्पर्श करने के बाद हाथ जोड़कर, समस्त पापक्षयार्थं व्याहृतिऋष्यादिन्यासङ् करिष्ये-इतना कहकर सङ्कल्प करे अर्थात् समस्तपापक्षयार्थसङ्कल्प पढ़ना चाहिये। आगे पुनः स्पर्श करे—यथा

सप्तव्याहृतीनाञ्जमदग्नि-भारद्वाजात्रि-गौतमः कश्यप-विश्वामित्र-वशिष्ठादिऋषिभ्योनमः शिरसि = इससे शिर का स्पर्श करै।

ॐ गायत्र्युष्णिगनुष्टुब्बृहती पङ्क्तित्रिष्टुब्जगतीच्छन्दो-भ्योनमः मुखे = इससे मुख का स्पर्श करे।

ॐ अग्निवायुसूर्यबृहस्पतिवरुणेन्द्रविश्वेदेवदेवताभ्योनमः हृदये = इससे हृदय का स्पर्श करे।

॥ इतिव्याहृतिऋष्यादिन्यासः ॥ (२)

इसके बाद—हाथ जोड़कर, समस्तपापक्षयार्थंगायत्री—ऋष्यादि न्यासङ्, करिष्ये इतना कह करके सङ्कल्प करे।

आगे गायत्री ऋष्यादि न्यासका क्रम वर्णन किया जा रहा है। हाथ में जल लेकर—ॐगायत्र्याविश्वामित्र ऋषिः। गायत्रीच्छन्दः। सविता देवता। न्यासे जपे च विनियोगः।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इतना कहकर किसी पात्र में या पात्राभाव हो तो पृथ्वी पर हाथ का जल गिरा देवे ।

आगेगायत्री ऋष्यादिन्यास लिखे जा रहे हैं ।

।। अथ गायत्रीऋष्यादिन्यासः ।। (३)

ॐ गायत्र्याविश्वामित्र ऋषये नमः शिरसि = इससे शिर का स्पर्श करे ।

ॐ गायत्रीछन्दसे नमः-मुखे = इससे मुख का स्पर्श करे ।

ॐ सवितृदेवतायैनमः हृदये

अथवा

ॐ परमात्मदेवतायैनमः हृदये—इससे हृदय का स्पर्श करें ।

।। इति गायत्र्याऋष्यादिन्यासः ।।

।। अथ शिरस ऋष्यादिन्यासः ।।

ॐ शिरसः प्रजापति ऋषिर्यजुश्छन्दः ब्रह्माग्निवायुसूर्या देवता, प्राणायामे विनियोगः—इतना कर हाथ का जल पात्र में या पृथ्वी पर छोड़ दें ।

ॐ प्रजापतिऋषयेनमः शिरसि—इससे शिर का स्पर्श करे

ॐ यजुश्छन्दसे नमः मुखे—इससे मुख का स्पर्श करे

ॐ ब्रह्माग्निवायुसूर्यदेवताभ्योनमः हृदये—इससे हृदय का स्पर्श करे ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

।। इतिशिरस ऋष्यादिन्यास: (४) ।।

।। आगे व्याहृतिन्यास का विवेचन (५) ।।

ॐ भूः नमः हृदये—इससे हृदय का स्पर्श करे।
ॐ भुवः नमः मुखे—इससे मुख का स्पर्श करे।
ॐ स्वः नमः दक्षांसे—इससे दाहिने कन्धे का स्पर्श करे।
ॐ महः नमः वामांसे—इससे बायें कन्धे का स्पर्श करें।
ॐ जनः नमः दक्षिणोरौ—इससे दाहिने कटि (कमर के नीचे का भाग) स्पर्श करे।
ॐ तपः नमः वामोरौ—इससे बाम कमर के नीचे का भाग का स्पर्श करे।
ॐ सत्यं नमः जठरे—इससे पेट का स्पर्श करे।
इति व्याहृतिन्यासः—इति व्याहृतिन्यास (५)

।। (६) अथ गायत्र्यक्षरन्यासः ।।

नीचे मन्त्रों से क्रमशः स्पर्श करे।

ॐ तत् नमः गुल्फयोः—इससे पैर के टिहनों के नीचे स्पर्श करे।
अथवा पादाङ्गुलिमूलयोः—अथवा पादाँगुलिमूल, में
ॐ सं नमः पादपार्श्वयोः—इससे पैरों के दोनों भागों का अथवा गुल्पयोः स्पर्श करे। (अथवा पैर के टिहुने के नीचे का स्पर्श करे)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ॐ विं नमः जानुनोः—इससे पैरों के टिहुनों के ऊपर जानु का स्पर्श करे।

ॐ तुं नमः पादमूलयोः—इससे पैरों के अग्रभाग का स्पर्श करे।

ॐ वं नमः जङ्घयोः—इससे दोनों जङ्घों का स्पर्श करे
(अथवा लिंगे) (अथवा लिंग का)

ॐ रें नमः नाभौ—इससे नाभि का स्पर्श करे।

ॐ णिं नमः हृदये—इससे हृदय का स्पर्श करे।

ॐ यं नमः कण्ठे—इससे कण्ठ का स्पर्श करे।

ॐ भं नमः हस्तयोः—इससे हाथों का स्पर्श करे।

अथवाहस्ताङ्गुलिमूलयोः—अथवा हाथ की अंगुलि मूल का स्पर्श करे।

ॐ गौं नमः मणिवन्धयोः—इससे मणिवन्ध का स्पर्श करे

ॐदें नमः कूर्पयोः—इससे दोनों हाथों के टेहुनोंका स्पर्श करे

ॐ वंनमः वाहुमूलयोः—इससे दोनों हाथों के मूल भागों का स्पर्श करे।

ॐ स्यंनमः आस्ये—इससे मुख का शपर्श करे।

ॐ धींनमः नासापुटयोः—दोनों नासिका छिद्रोंका स्पर्श करे

ॐ मं नमः कपोलयोः—इससे गालों का स्पर्श करे।

ॐ हिं नमः नेत्रयोः—इससे दोनों नेत्रों का स्पर्श करे।

ॐ धिंनमः कर्णयोः—इससे दोनों कानों का स्पर्श करे।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ॐ योंनमः भ्रूमध्ये–इससे दोनों भ्रूमध्य में स्पर्श करे।
ॐ योंनमः मस्तके–इससे मस्तक का स्पर्श करे।
ॐ नं नमः पश्चिमवक्त्रे–इससे मुख के पश्चिम भाग का स्पर्श करे।
ॐ प्रंनमः उत्तरवक्त्रे–इससे मुख के उत्तर भाग का स्पर्श करे।
ॐ चोंनमः दक्षिणवक्त्रे–मुख के दक्षिण भाग का स्पर्श करे।
ॐ दंनमः पूर्ववक्त्रे–इससे मुख के पूर्व भाग का स्पर्श करे
ॐ यात्नमः ऊर्ध्ववक्त्रे–इससे मुख के ऊपर के भाग का स्पर्श करे।

॥ इत्यक्षरन्यासः ॥ ॥ इतिअक्षरन्यास ॥

॥ इतिगायत्र्यक्षरन्यास ॥ (६)

॥ अथपदन्यास ॥ (७)

नीचे लिखे क्रम से प्रतिमन्त्र से पूर्ववत् न्यास करे।

ॐ तत् नमःशिरसि–इससे शिर का स्पर्श करे।
ॐ सवितुर्नमःभ्रुवोर्मध्ये–इससे भ्रू मध्य का स्पर्श।
ॐ वरेण्यंनमःनेत्रयोः–इससे दोनों नेत्रों का स्पर्श।
ॐ भर्गोनमःमुखे–इससे मुख का स्पर्श करे।
ॐ देवस्यनमः जठरे–इससे पेट का स्पर्श करे।
ॐ धीमहिनमः हृदये–इससे हृदय का स्पर्श करे।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ॐ धियो नमः नाभौ—इससे नाभि का स्पर्श करे।

ॐ यो नमः गुह्ये—इससे गुप्त स्थान का स्पर्श करे।

ॐ नमः जानुनो:—इससे जानुओं का स्पर्श करे।

ॐ प्रचोदयात् नमः पादयो:-इससे दोनों पैरों का स्पर्श करे

ॐ आपोज्योतीरसोऽमृतं ब्रह्मभूर्भुवः स्वरोमिति शिरसि—
इससे शिर का स्पर्श करे (७)

इतिगायत्रीपदन्यासः (७) इतिगायत्रीपदन्यास

।। अथ पादन्यासः (८) ।।

ॐ तत्सवितुर्वरेण्यंनमः नाभ्यादि-पादपर्यन्तम्—इससे नाभि से
लेकर पादपर्यन्त तक का स्पर्श करे।

ॐ भर्गोदेवस्यधीमहि नमः हृदयादिनाभ्यन्तम्—इसमे हृदय से
नाभि पर्यन्त तक का स्पर्श करे।

ॐ धियोयोनः प्रचोदयात् नमः मूर्धादि-हृदयान्तम्—इससे शिर
से हृदयपर्यन्त तक का स्पर्श करे।

ॐ परोरजसेसावदोम्नमः इतिमूर्न्धिविन्यस्य—
इससे पुनः शिर का स्पर्श करे।

।। इति गायत्री पादन्यासः ।।

अथकरन्यासः—नीचे लिखे क्रम से करन्यास करे

ॐ भूःअंगुष्ठाभ्यांनमः- इससे अंगूठों का न्यास करे।

ॐ भुवः तर्जनीभ्यांनमः- इससे तर्जनीका न्यास करे।

ॐ स्वः मध्यमाभ्यांनमः- इससे मध्यमाओं का न्यास करे।

ॐ तत्सवितुर्वरेण्यम्- अनामिकाभ्यांनमः— इससे अनामिकाओं
का न्यास करे।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ॐ भर्गोदेवस्यधीमहि- कनिष्ठिकाभ्यांनमः- इससे कनिष्ठिकाओं का न्यास करे।

ॐ धियोयोनः प्रचोदयात्- करतलकरपृष्ठभ्यांनमः- इससे ताली बजावे।

इतिकरन्यासः (९) इतिकरन्यास (९)

॥ अथगायत्री हृदयादिन्यासः (१०) ॥

ॐ भूः हृदयाय नमः– इससे हृदय का स्पर्श करे।

ॐ भुवः शिरसेस्वाहा– इससे शिर का स्पर्श करे।

ॐ स्वः शिखायैवषट्– इससे चोटी (शिखा) का स्पर्श करे।

ॐ तत्सवितुर्वरेण्यम् कवचायहुम्– इससे कन्धों के पास स्पर्श करे नीचे भाग में

ॐ भर्गोदेवस्य धीमहि नेत्राभ्यांवौषट्–इससे नेत्रों का स्पर्श करे

ॐ धियोयोनः प्रचोदयात् अस्त्रायफट्– इससे चुटकी बजावे।

इतिगायत्रीहृदयादिन्यासः(१०) इति गायत्री हृदयादिन्यास(१०)

इति गायत्री हृदयादिन्यासः

॥ अथगायत्र्याःषडङ्गन्यासः (११) ॥

—हिन्दी में अर्थ

ॐ सवितुर्ब्रह्मणेहृदयायनमः– इससे हथेली से हृदय का स्पर्श करे।

ॐ वरेण्यंविष्णवे शिरसे स्वाहा– इससे चारों अंगुलियों के अग्रभाग से मस्तक स्पर्श करे।

ॐ भर्गोदेवस्य रुद्रायशिखायैवषट्– इससे अंगूठा से शिखा का स्पर्श करे।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ॐ धीमहि ईश्वरायकवचायहुम्– इससे दहिनी कनिष्ठा के मूल से वांईं भुजा का तथा वाँई कनिष्ठा के मूल से दाहिनी भुजा का स्पर्श करे।

ॐ धियोयोनः सदाशिवाय नेत्रत्रयायवौषट्– इससे मध्यमा तथा तर्जनी से नेत्र का स्पर्श करे।

ॐ प्रचोदयात् सर्वात्मने अस्त्रायफट् इति मन्त्रेणोर्ध्वाधस्तालत्रयङ्कृत्वा छोटिकमुद्रया दिग्वन्धन विधाय मूलेनव्यापकङ्कुर्यात्

इसे पढ़कर वाँये हाथ की हथेलीपर दाहिने हाथकी मध्यमा तथा तर्जनी से तीनबार ताली बजावे। इसप्रकार तीनवार हृदय आदि का स्पर्श करता हुआ (छोटिकमुद्रा) अर्थात् चुटकी से चारों तरफ दिग्बन्धन करे, बाद में व्यापक मुद्रा अर्थात् दोनों हाथ उत्तान करे।

इतिषडङ्गन्यासः समाप्तः (११) इतिषडंगन्याससमाप्त (११)

सङ्केत– ये उपरिलिखित ग्यारह न्यास मुख्य हैं- आगे लयाङ्गन्यास मे भी आचार्यों का मत है।

॥ अथलयाङ्गन्यासः ॥

ॐ अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं ऌं ॡं एं ऐं ओं औं अं अः, कं खं गं घं ङं, चं छं जं झं ञं, टं ठं डं ढं णं, तं थं दं धं नं, पं फं बं भं मं, यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं। भूः भुवः स्वः

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ॐ तत्सवितुर्वरेण्यंभर्गोदेवस्यधीमहि धियोयोन: प्रचोदयात् । क्षं लं हं सं षं शं वं लं रं यं मं भं बं फं पं नं धं दं थं तं णं ढं डं ठं टं ञं झं जं छं चं ङं घं गं खं कं अ: अं औं ओं ऐं एं ॡं ऌं ॠं ऋं ऊं उं ईं इं आं अं त् यादचोप्रन: यो योधिहि मधीस्यवदेर्गोभण्यं रेवंतुविसत्तस्व: व: भुं भू ॐ-इतिहृदयादिमुखान्तम् । एमेवहृदयादिकेशान्तन्नयासङ्कुर्यात्–ऊपर लिखे क्रम से प्रथम वार हृदय से मुखपर्यन्त तथा द्वितीयवान् हृदय से केशयर्यन्त का स्पर्श करे ।

॥ अथ पीठन्यास ॥

पीठ पूजा के पूर्व पीठन्यास करना चाहिये, आगे पीठन्यास का क्रम वर्णन किया जा रहा है ।

ॐ मं मण्डूकाय नम: मूलाधारे । ॐ कं कालाग्नि-रुद्राय नम: ॥ स्वाधिष्ठाने । ॐ मं मूल प्रकृत्यै नम:-नाभौ । ॐ अं आधारशक्तये नम: - हृदये । कं कूर्माय नम: । वं वराहायनम: । धं धरिण्यैनम: । सं सुधा-सिन्धवेनम: । रं रत्नदीपायनम: । मं मणि मण्डलाय नम: । कं कल्पवृक्षायनम: । स्व स्वर्णवेदिकायैनम: रं रत्नसिंहासनाय नम:- दक्षांसे । धं धर्मायनम:-वामांसे । ज्ञां ज्ञानाय नम:- वामोरौ । वं वैराग्यनम:-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दक्षोरौ । ऐं ऐश्वर्यायनमः- मुखे । अं अधर्मायनमः- वाम पार्श्वे । अं अज्ञानायनमः- दक्षपार्श्वे । अं अवैराग्यनमः नाभौ । अं अनैश्वर्य्यायनमः- हृदये । अं अनन्तायनमः- सर्वोपरि न्यासङ्कुर्यात् ।

ऊपर लिखे मन्त्रों से गायत्री के पीठ पर अक्षत छोड़े । आगे पुनः लिखे मन्त्रों से अक्षत गायत्री पीठ पर छोड़े ।

अं अम्बुजायनमः । सं संविन्नालायनमः । सं सर्व-तत्वात्मकाय पद्मायनमः । प्रं प्रकृतिमयपत्रेभ्योनमः । विं विकारमयकेशरेभ्योनमः । पं पञ्चाशद्वर्णकर्णि-कायैनमः । वं द्वादश कलात्मने सूर्यमण्डलायनमः । वं षोडश कलात्मने चन्द्रमण्डलायनमः । सं सत्वात्मने नमः । रं रजसेनमः । तं तमसेनमः । आं आत्मनेनमः । अं अन्तरात्मनेनमः । पं परमात्मनेनमः । ह्रांदीप्तायै ह्रीं सूक्ष्मायैनमः । ह्रां विद्युतायै नमः । पीठमध्ये सर्वतोमुख्यैनमः ।

पीठ के ऊपर पूजाचक्र बनाकर उस पूजाचक्र पर "ॐ ब्रह्म-विष्णुरुद्राऽम्बिकात्मकाय सौर पीठात्मने नमः" कहकर चावल छोड़ना चाहिए । इतिपीठन्यासः । पीठन्यास के बाद–एक या तीन प्राणायाम करके गायत्री का ध्यान करे ।

ध्यानम्—

मुक्ता, विद्रुम, हेम, नील, धवलच्छायैर्मुखैस्त्रीक्षणैर्यु-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

क्तामिन्दु,निवद्ध,रत्नमुकुटान्तत्वार्थवर्णात्मिकाम् ॥ गायत्रीं वरदाऽभयाङ्कुश- कशांशुभ्रङ्कपालङ्गुणं शङ्खञ्चक्रमथारविन्दु-युगलंहस्तैर्वहन्तीम्भजे ।

अर्थ—स्त्रियों के उचित शोभायुक्त, मुक्ता विद्रुम, स्वर्ण, नील तथा स्वच्छ छाया वाले तीन नेत्रों से युक्त, मुखों से युक्त, चन्द्रमा तथा अनेक प्रकार के रत्नों से सुशोभित मुकुटों को धारण करने वाली वर, अभय, अंकुश, कशा, शुभ्र कपाल, यज्ञोपवीत, शङ्ख, चक्र तथा दो कमलों को अपने हाथों में धारण करने वाली गायत्रीदेवी का हम ध्यान करते हैं। गायत्री का ध्यान करने के पश्चात्–मानसोपचार से वाह्यपूजावत् पूजा करे—

मानसपूजा—

ॐ लं पृथीव्यात्मकं गन्धं समर्पयामि ॥१॥इससे गंध अर्पण करे

ॐ हं आकाशात्मकं पुष्पं समर्पयामि ॥२॥इससे पुष्प ।

ॐ यं वाय्वात्मकं धूपं समर्पयाभि ॥३॥इससे धूप ।

ॐ रं तेजआत्मकं दीपं समर्पयामि ॥४॥इससे दीप ।

ॐ वं अमृतात्मकं नैवेद्यं समर्पयामि ॥५॥इससे नैवेद्य ।

ॐ सं सर्वात्मकं मन्त्रपुष्पं समर्पयामि ॥६॥इससे मन्त्र पुष्प ।

पश्चात्- स्वागतन्देवदेवेशि ! सन्निधौ मे महेश्वरि ।
गृहाणमानसीम्पूजां यथार्थपरिभाविताम् ॥

अर्थ—हे देव देवेशि मैं तुम्हारा स्वागत करता हूँ। तुम मेरे समीप स्थित होकर यथार्थ रूप से मानसी पूजा ग्रहण कीजिये।

यह मन्त्र दस बार अथवा तीन बार जप करके गाथत्रीदेवी के वामहस्त में जप को समर्पण कर, मन से पुष्पाञ्जलि देकर अपने को गायत्री स्वरूप में ही समझ, अनेक प्रकार के (वरदमुद्रा, अभय, अंकुश, कशा, कपाल, गुणशङ्ख, चक्र, योनि आदि) मुद्रा प्रदर्शित करे।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सङ्केत—मुद्राओं का यदि ज्ञान न हो तो केवल हाथ जोड़कर क्षमा याचना करे, यह मत भी मान्य है। मुद्राओं का प्रदर्शित करना केवल तान्त्रिक मन्त्रों में ही है। मानस पूजा के पश्चात वहिःपूजा अर्थात् प्रत्यक्ष पूजा सामग्री एकत्रित कर पीठ पूजा आदि करे।

पूजन के लिये एक पात्र में जल भर कर नीचे लिखे मन्त्रों को पढ़े—

मन्त्र— ॐ क्षं नमः। ॐ लं नमः। ॐ हं नमः। ॐ सं नमः। ॐ षं नमः। ॐ शं नमः। ॐ वं नमः। ॐ लं नमः। ॐ रं नमः। ॐ यं नमः। ॐ मं नमः। ॐ भं नमः। ॐ बं नमः। ॐ फं नमः। ॐ पं नमः। ॐ नं नमः। ॐ धं नमः। दं नमः। ॐ थं नमः। ॐ तं नमः। ॐ णं नमः। ॐ ढं नमः। ॐ डं नमः। ॐ ठं नमः। ॐ टं नमः। ॐ ञं नमः। ॐ झं नमः। ॐ जं नमः। ॐ छं नमः। ॐ चं नमः। ॐ ङं ॐ घं नमः। ॐ गं नमः। ॐ खं नमः। ॐ कं नमः। ॐ अः नमः। ॐ अं नमः। ॐ औं नमः। ॐ ओं नमः। ॐ ऐं नमः। ॐ एं नमः। ॐ ॡं नमः। ॐ ऌं नमः। ॐ ॠं नमः। ॐ ऋं नमः। ॐ ऊं नमः। ॐ उं नमः। ॐ ईं नमः। ॐ इं नमः ॐ आं नमः। ॐ अं नमः।

इतने मन्त्र पढ़कर पात्र स्थित जल में पूजन नीचेलिखे मन्त्रों से करे तथा तीर्थादिकों का आवाहन करे।

मन्त्र—ॐ सं सोममण्डलाय षोडशकलात्मने नमः। ॐ अं अमृतायै नमः। ॐ मं मानदायै नमः। ॐ पू पूषायै नमः। ॐ सं समृद्धयै नमः। ओं तुं तुष्ट्यै नमः। ॐ पुं पुष्ट्यै नमः ॐ रं रत्यै नमः। ॐ ज्यों ज्योत्नायै नमः। ॐ श्रों श्रियै नमः। ॐ कीं कीर्त्यै नमः। ॐ अं अङ्गदायै नमः। ॐ पूं पूर्णायै नमः।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गङ्गे ! च यमुने ! चैव गोदावरि ! सरस्वति !
नर्मदे ! सिन्धु ! कावेरि ! जलेऽस्मिन् सन्निधौभव

ऊपर लिखे मन्त्र से तीर्थादिकों का आवाहन कर, इसी पात्र स्थित जल से पीठ स्थित देवता आदि का पूजन करे।

सङ्केत—पात्र स्थित जल में—आवहनादि के समय—योनि—धेनु—शङ्ख—मत्स्य—अंकुश आदि मुद्राओं के प्रदर्शित करने का प्रसङ्ग आता है। यदि उन मुद्राओं का ज्ञान हो तो मुद्रा प्रदर्शित करे। प्रदर्शित न करने में भी दोष नहीं आता है—ऐसा विद्वन्मण्डल का मत है। मुद्रा प्रदर्शित करने की अनिवार्य्य आवश्यकता नहीं है। स्वेच्छाधीन है। तान्त्रिक मन्त्रों में मुद्राओं का प्रदर्शन आवश्यक है। श्री गायत्री महामन्त्र वेदमन्त्र होने से कोई आवश्यकता नहीं है।

पूजन स्थान में—पाद्यपात्र—आचमनीयपात्र—स्नानीयपात्र—मधुपर्क पात्र—विनियोग पात्र—आदि सभी पात्र पृथक-पृथक होने चाहिये।

श्री गायत्रीदेवी पूजा विधान—अति संक्षेप से संकेतमात्र लिखा जा रहा है— सुजन समुदाय जितना विस्तार से करना चाहें करें। वैदिक—पौराणिक—तान्त्रिकादि मन्त्रों से विशेष विस्तार पूजन का है—यहाँ तो दिग्दर्शनमात्र किया जा रहा है।

ध्यानम्— ॐ भूर्भुवःस्वः भगवत्यै श्री गायत्र्यैदेव्यैनमः-ध्यानं समर्पयामि।

अर्थ—ध्यान—दाहिने हाथ में लाल पुष्प या लाल चावल (रँगे हुये चावल) लेकर श्री गायत्रीदेवी का ध्यान करे।

आवाहनम्— ॐ भूर्भुवःस्वः भगवत्यै श्रीगायत्र्यैदेव्यैनमः-आवाहनं समर्पयामि।

अर्थ—आवाहन—चावल अथवा पुष्प लेकर गायत्रीदेवी का आवहन करे।

आसनम्— ॐ भूर्भुवः स्वः भगवत्यै श्रीगायत्र्यै देव्यैनमः-आसनार्थं पुष्पाण्यथवाक्षतान् समर्पयामि।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अर्थ—आसन—श्री गायत्रीदेवी के लिये आसनार्थ–पुष्प अथवा चावल चढ़ावे ।

पाद्यम–ॐ भूर्भुवः स्वः भगवत्यै श्रीगायत्र्यै देव्यैनमः–पादयोः पाद्यं समर्पयामि ।

अर्थ—पाद्य—श्री गायत्रीदेवी के चरणों में जल चढ़ावे ।

अर्घ्यम्– ॐ भूर्भुवः स्वः भगवत्यै श्रीगायत्र्यैदेव्यैनमः–हस्तयोरर्घ्यं समर्पयामि ।

अर्थ—अर्घ्यं—श्री गायत्रीदेवी के हाथों में जल चढ़ावे ।

आचमनम्–ॐ भूर्भुवः स्वः भगवत्यै श्रीगायत्र्यै देव्यैनमः-मुखे-आचमनीयं समर्पयामि ।

अर्थ—आचमन—श्री गायत्रीदेवी के लिये आचमनार्थं जल देवे ।

मधुपर्कः–ॐ भूर्भुवः स्वः भगवत्यै श्रीगायत्र्यै देव्यैनमः-मधुपर्कं-समर्पयापि ।

अर्थ—मधुपर्क—श्री गायत्रीदेवी के लिये मधुपर्क चढ़ावे । मधुपर्क के बाद आचमन करावे ।

।। पञ्चामृतस्नानम् ।।

तत्रादौपयःस्नानम्–ॐ भूर्भुव. स्वः भगवत्यै श्री गायत्र्यैदेव्यैनमः-पयः स्नानं समर्मयामि । पयः स्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि । शुद्धोदकस्नानान्ते-आचमनीयं समर्पयामि ।

अर्थ—पूर्वपयस्नान—श्री भगवती गायत्रीदेवी को दुग्ध से स्नान करावे । दुग्ध स्नान के बाद–शुद्ध जल से स्नान करावे । शुद्ध जल के बाद आचमन करावे ।

ॐ भूर्भुवः स्वः भगवत्यै श्रीगायत्र्यै देव्यैनमः-दधिस्नानं समर्पयामि । दधि स्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि । शुद्धोदकस्नानान्ते-आचमनीयं समर्पयामि ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अर्थ—दधिस्नान—दधि स्नान के पश्चात् शुद्ध जल से स्नान करावे। शुद्ध जल के बाद आचमन करावे।

घृतस्नानम्—ॐ भूर्भुवः स्वः भगवत्यै श्रीगायत्र्यै देव्यैनमः घृतस्नानं समर्पयामि। घृतस्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। शुद्धोदक स्नानान्ते-आचमनीयं समर्पयामि।

अर्थ—घृत स्नान—श्री गायत्रीदेवी को घृत से स्नान करावे। घृत स्नान के बाद शुद्ध जल से स्नान करावे। शुद्ध जल के पश्चात आचमन करावे,

मधुस्नानम्—ॐ भूर्भुवः स्वः भगवत्यै श्रीगायत्र्यै देव्यैनमः- मधुस्नानं समर्पयामिं। मधुस्नानान्तेशुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। शुद्धोदक स्नानान्ते आचमनीयं समर्पयामि।

अर्थ—मधुस्नान—श्रीगायत्री देवी को मधु (शहद) से स्नान करावे। मधु स्नान के बाद शूद्ध जल से स्नान करावे। शुद्ध जल के पश्चात् आचमन करावे।

शर्करास्नानम्—ॐ भूर्भुवः स्वः भगवत्यै श्रीगायत्र्यैदेव्यैनमः- शर्करास्नानं समर्पयामि। शर्करास्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। शुद्धोदक स्नानान्ते आचमनीयं समर्पयामि।

अर्थ—शर्करास्नान—श्री गायत्री देवी को शर्करा (शक्कर) से स्नान करावे। शर्करा स्नान के पश्चात्-शुद्ध जल से स्नान करावे। शुद्ध जल के पश्चात्-आचमन करावे।

गन्धोदकस्नानम्—ॐ भूर्भुवः स्वः भगवत्यै श्रीगायत्र्यै देव्यैनमः- गन्धोदकस्नानं समर्पयामि। तदन्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। शुद्धोदकस्नानान्ते आचमनीयं समर्पयामि।

अर्थ—गन्धोदक स्नान—श्री गायत्रीदेवी को गन्धोदक (इत्र आदि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

से) से स्नान करावे। सुगन्ध युक्तजल स्नान के पश्चात्- शुद्ध जल से स्नान करावे, पश्चात् आचमन करावे।

उद्वर्तनस्नानम्-ॐ भूर्भुवः स्वः भगवत्यै श्रीगायत्र्यै देव्यै-नमः- उद्वर्तनस्नानं समर्पयामि। तदन्ते शुद्धपयः स्नानं समर्पयामि-शुद्धपयःस्नानान्ते आचमनीयं समर्पयामि।

अर्थ-उद्वर्तनस्नान-(उबटन स्नान) श्रीगायत्री देवी को उबटन स्नान करावे। अर्थात्- हल्दी, सहदेवी, शिरीष, लक्ष्मणा, भद्राये, औषधियाँ तथा कुश के अग्रभाग को जल में डालकर उबटन स्नान करावे। पश्चात् शुद्ध जल से स्नान करावे। शुद्ध जल के स्नान के पश्चात् आचमन करावे।

पादुकार्पणम्- ॐ भूर्भुवः स्वः भगवत्यै श्रीगायत्र्यै देव्यै-नमः-पादयोः पादुके समर्पयामि।

अर्थ—पादुकार्पण-श्री गायत्री देवी के चरणों में पादुका (खड़ाऊँ) अर्पण करे।

वस्त्राणि- ॐ भूर्भुवः स्वः भगवत्यै श्रीगायत्र्यै देव्यैनमः वस्त्राणिसमर्पयामि। पश्चात-आचमनीयं समर्पयामि।

अर्थ—श्री गायत्री देवी के लिये वस्त्रों को समर्पण करे। पश्चात् आचमन करावे।

उपवस्त्राणि- ॐ भूर्भुवः स्वः भगवत्यै श्रीगायत्र्यै देव्यै-नमः- उपवस्त्राणि समर्पयामि। तदन्तेच आचमनीयं समर्पयामि।

अर्थ—उपवस्त्र-श्री गायत्री देवी के लिए उपवस्त्र समर्पण करे। पश्चात् आचमन करावे।

अलङ्कारान्-ॐ भूर्भुवः स्वः भगवत्यै श्रीगायत्र्यै देव्यै-नमः अलङ्कारान् समर्पयामि। हस्तयोः कङ्कणे, कर्णयोः

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कुण्डले, कण्ठेग्रैवेयकम्, बाह्वोः, अङ्गदे, करयो रङ्गुलिमुद्रिकाम्, कटिदेशेकाञ्चीम्, पादयोर्नूपुरे, शिरसिमुकुटम्, श्रीभगवत्यागायत्रीदेव्याः सर्वेष्वङ्गेषु-प्रत्यङ्गेषु च शोभार्थं सर्वानाभूषणान् समर्पयामि ।

अर्थ—अलङ्कार-श्री गायत्रीदेवी के लिये अलङ्कार समर्पण करे- यथा हाथों के लिये कङ्कण, कानों के लिये कुण्डल, गले में हार, कर के आभूषण बाजूबन्द, अंगुलिये अंगूठी, कमर के लिये करधनी, पैरों के छागल व बिछिया, शिर के लिये मुकुट आदि । श्री गायत्रीदेवी के अंग प्रत्यंगों के शोभा के लिये सभी आभूषण समर्पण करे ।

गन्धम्—ॐ भूर्भुवः स्वः भगवत्यै श्रीगायत्र्यै देव्यैनमः-गन्धं समर्पयामि ।

अर्थ—गन्ध—श्री गायत्रीदेवी के लिये चन्दन चढ़ावे ।

कुङ्कुमम्—ॐ भूर्भुवः स्वः भगवत्यै श्रीगायत्र्यै देव्यैनमः भाले कुङ्कुमं समर्पयामि ।

अर्थ— कुंकुम—श्री गायत्रीदेवी को रोरी आदि चढ़ावे ।

अक्षतान्—ॐ भूर्भुवः स्वः भगवत्यै श्रीगायत्र्यै देव्यैनमः अक्षतान् समर्पयामि ।

अर्थ—अक्षत—श्री गायत्रीदेवी को चावल चढ़ावे ।

पुष्पाणि—ॐ भूर्भुवः स्वः भगवत्यै श्रीगायत्र्यै देव्यैन· : पुष्पाणि समर्पयामि ।

अर्थ—पुष्प—श्री गायत्रीदेवी को पुष्प चढ़ावे ।

पुष्पमालाम्—ॐ भूर्भुवः स्वः भगवत्यै श्रीगायत्र्यै देव्यैनमः पुष्पमालां समर्पयामि ।

अर्थ—पुष्पमाला—श्री गायत्रीदेवी को पुष्पमाला चढ़ावे ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सिन्दूरादि–ॐ भूर्भुवः स्वः भगवत्यै श्रीगायत्र्यै देव्यैनमः सौभाग्यपरिमलद्रव्याणि समर्पयामि ।

अर्थ—सिन्दूरादि–श्री गायत्रीदेवी के लिये सिन्दूर तथा सौभाग्य द्रव्य चढ़ावे ।

कज्जलम्–ॐ भूर्भुवः स्वः भगवत्यै श्रीगायत्र्यै देव्यैनमः कज्जलं समर्पयामि ।

अर्थ— कज्जल–श्री गायत्रीदेवी के लिये काजल अर्पण करे ।

अत्तरादि–ॐ भूर्भुवः स्वः भगवत्यै श्रीगायत्र्यै देव्यैनमः अत्तरादि समर्पयामि ।

अर्थ—अत्तरादि–श्री गायत्रीदेवी के लिये इत्र आदि अर्पण करे।

धुपम्–ॐ भूर्भुवः स्वः भगवत्यै श्रीगायत्र्यै देव्यैनमः धूपमाघ्रापयामि ।

अर्थ—धूप–श्री गायत्रीदेवी के लिये धूप अर्पण करे ।

दीपम्–ॐ भूर्भुवः स्वः भगवत्यै श्रीगायत्र्यै देव्यैनमः दीपन्दर्शयामि ।

अर्थ—दीप–श्री गायत्रीदेवी के लिये दीप प्रदर्शित करे ।

नैवेद्यम्–ॐ भूर्भुवः स्वः भगवत्यै श्रीगायत्र्यै देव्यैनमः नैवेद्यं समर्पयामि । नैवेद्यान्ते-आचमनीयञ्च समर्पयामि ।

अर्थ—नैवेद्य–श्री गायत्रीदेवी के लिये नैवेद्य अर्पण करे । नैवेद्य के पश्चात् आचमन करावे ।

फलानि–ॐ भूर्भुवः स्वः भगवत्यै श्रीगायत्र्यै

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

देव्यैनमः फलानि समर्पयामि । तदन्ते आचमनीयं समर्पयामि ।

अर्थ—फल–श्री गायत्रीदेवी के लिये नाना प्रकार के फल अर्पण करे–पश्चात् आचमन करावे ।

ताम्बूलम्—ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीगायत्र्यै देव्यैनमः मुखवासार्थं श्री गायत्र्यै देव्यै-एलालवङ्गादिभिर्युतन्ताम्बूलं समर्पयामि ।

अर्थ—ताम्बूल–श्री गायत्रीदेवी के मुख शुद्धि के लिये कपूर, इलायची, लवङ्ग, जायफल आदि से सुगन्धित ताम्बूल अर्पण करे ।

पूगीफलम्—ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीगायत्र्यै देव्येनमः पूगीफलं समर्पयामि ।

अर्थ – पूगीफल–श्री गायत्रीदेवी के लिये सुपारी चढ़ावे ।

दक्षिणा—ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीगायत्र्यै देव्यैनमः द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि ।

अर्थ –दक्षिणा–श्री गायत्रीदेवी के लिये द्रव्यादि दक्षिणा चढ़ावे ।

राजोपचारान्—ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीगायत्र्यै देव्यैनमः राजोपचारान् समर्पयामि । अर्थात् (छत्रम्, चामरे, आदर्शम् तालवृन्तं समर्पयामि)

अर्थ—राजोपचार–श्री गायत्रीदेवी के लिये छत्र, चामर, शीशा, ताड़ का पंखा आदि समर्पण करे ।

पञ्चामृतस्नान–अभ्याङ्क–उद्वर्तन–मधुपर्क–परिमलद्रव्य–पादुका–शीशा–व्यञ्जन–चामर–वाद्य–आर्तिक्य–नृत्य–गीत–आदि ये सभी वस्तुयें राजोपचार में कहीं हैं ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आर्तिक्यम्—ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीगायत्र्यै देव्यैनमः आर्तिक्यं समर्पयामि ।

अर्थ—आर्तिक्यं—श्री गायत्रीदेवी की आरती करे ।

मन्त्रपुष्पाञ्जलिः—ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीभगवत्यै श्री गायत्र्यै देव्यैनमः मन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि ।

अर्थ—मन्त्रपुष्पाञ्जलि—श्री गायत्रीदेवी के लिये मन्त्र पुष्पाञ्जलि अर्पण करे ।

प्रदक्षिणाम्—ॐ भूर्भुवः स्वः भगवत्यै श्रीगायत्र्यै देव्यैनमः प्रदक्षिणां समर्पयामि ।

अर्थ—प्रदक्षिणा—श्री गायत्रीदेवी की प्रदक्षिणा करे ।

पश्चात् यथाशक्तिगायत्रीमन्त्रजपःकार्यः—"गायत्री मन्त्रमष्टोत्तरशतम्-अष्टाविंशतिवारम्-दशवारंवाजपेत् ।

अर्थ—प्रदक्षिणा के बाद एक सौ आठ बार, अट्ठाइस अथवा दस बार गायत्री मन्त्र का जप करे ।

इति अतिसङ्क्षेपसेश्रीगायत्रीपूजनसमाप्त

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री गायत्री पूजा यन्त्रम्

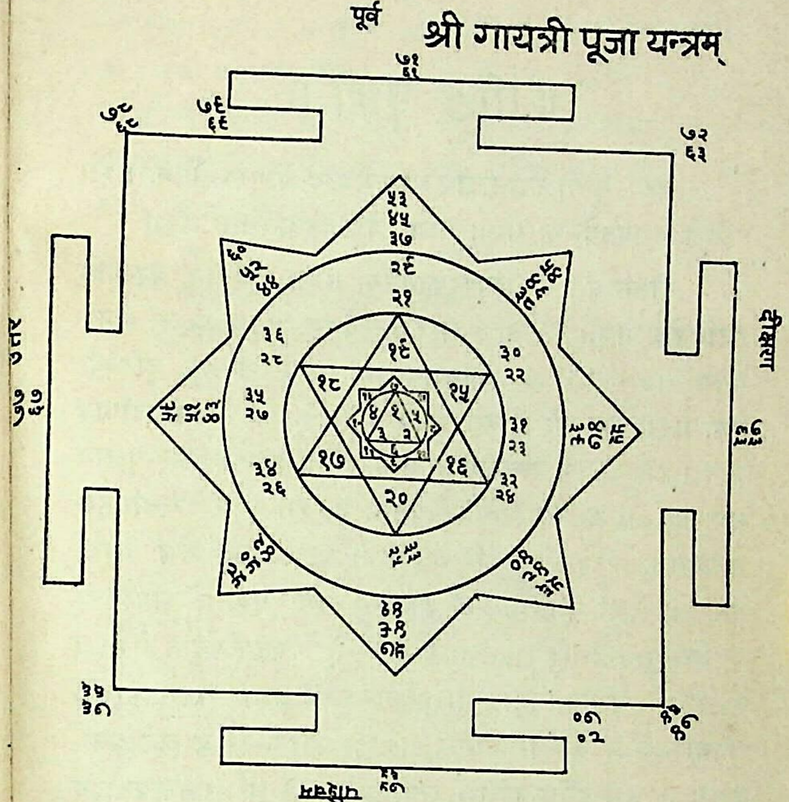

॥ देवतासङ्ख्याविवरणम् ॥

१—त्रिकोणे	— ६		६—द्वितीयाष्टदलमूले	—	८
२—प्रथमाष्टदले	— ८		७—द्वितीयाष्टदलमध्ये	—	८
३—षट्कोणे	— ६		८—द्वितीयाष्टदलाग्रे	—	८
४—वर्तुले	— ८		९—भूपुरे	—	१०
५—तद्‌वाह्येवर्तुले	— ८		१०—भूपुरवाह्ये	—	१०
				योग	८०

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

॥ पीठ पूजा ॥

तद्यथा–पुष्पाक्षतानादाय स्ववामभागे श्रीगुरुभ्योनमः ॥१॥ दक्षिणे गणपतयेनमः ॥२॥ मध्य स्वेष्टदेवतायैनमः ॥३॥

पीठमध्ये– ॐ मंमण्डूकायनमः ॥१॥ ॐ कां कालाग्नि रुद्रायनमः ॥२॥ ॐ आं आधार शक्त्यैनमः ॥३॥ ॐ कूं कूर्मा-यनमः ॥४॥ ॐ अं अनन्ताय नमः ॥५॥ ॐ पृं पृथिव्यै-नमः ॥६॥ ॐ क्षीं क्षीरसागरायनमः ॥७॥ ॐ रं रत्नदीपाय नमः ॥८॥ ॐ रं रत्नमण्डलायनमः ॥९॥ ॐ कं कल्पवृक्षाय नमः ॥१०॥ ॐ रं रत्नवेदिकायैनमः ॥११॥ ॐ रं रत्नसिंहा-सनायनमः ॥१२॥ इत्युपरिसम्पूज्य ॥ आग्नेय्याम्-ॐ धं धर्माय नमः ॥१३॥ नैर्ॠत्याम्-ॐ ज्ञांज्ञानायनमः ॥१४॥ वायव्याम् ॐ वैराग्यानमः ॥१५॥ ईशान्याम्-ॐ ऐं ऐश्वर्यायनमः ॥१६॥ पूर्वं-ॐ अं अधर्मायनमः॥१७॥ दक्षिणे-ॐ अं अज्ञानायनमः॥१८॥ पश्चिमे-ॐ अं अवैराग्यायनमः ॥१९॥ उत्तरे–ॐ अं अनैश्वर्या-यनमः ॥२०॥ इतिपूजयेत् । ततोमध्ये– ॐ आं आनन्दकन्दाय नमः ॥२१॥ ॐ सं संविन्नालायनमः ॥२२॥ ॐ सं सर्वतत्व कमलासनायनमः ॥२३॥ ॐ प्रं प्रकृतिमयपत्रेभ्योनमः ॥२४॥ ॐ विं विकारमयकेसरेभ्योनमः ॥२५॥ ॐ पं पञ्चाशद्व-र्णाढ्यकर्णिकाभ्योनमः ॥२६॥ ॐ अं अर्कमण्डलाय द्वादशकला-त्मने नमः ॥२७॥ ॐ सों सोममण्डलायषोडशकलात्मनेनमः ॥१८॥ ॐ वं वह्निमण्डलायदशकलात्मनेनमः ॥२९॥ ॐ सं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सत्वायनमः ॥३०॥ ॐ रं रजसेनमः ॥३१॥ ॐ तं तमसेनमः ॥३२॥ ॐ आं आत्मनेनमः ॥३३॥ ॐ पं परमात्मनेनमः ॥३४॥ ॐ ह्रीं ज्ञानात्मनेनमः ॥३५॥ ॐ मं मायातत्त्वायनमः ॥३६॥ ॐ कंकलातत्त्वायनमः ॥३७॥ ॐ विंविद्यातत्त्वायनमः ॥३८॥ ॐ पं परतत्त्वायनमः ।

पूर्व में— ॐ प्रभूतायनमः ॥
दक्षिण में— ॐ विमलायनमः
पश्चिम में— ॐ सारायनमः ॥
उत्तर में— ॐ समाराध्यायनमः ॥
मध्य में— ॐ परमसुखायनमः ॥
बाहर में— ॐ अं अनन्तायनमः ॥
मध्य में— ॐ पृं पृथिव्यैनमः ॥

पुनः पूर्वादि क्रम से—ॐ अं अमृतसागरायनमः
आग्नेय में ॐ रं रत्न दीपाय नमः
दक्षिण में— ॐ हें हेमगिरिये नमः ॥
नैर्ऋत्य में— ॐ नं नन्दनोद्यानायनमः ॥
पश्चिम में— ॐ कं कल्पवृक्षेभ्योनमः ॥
वायव्य में— ॐ मं मणिभूषितभूतलायनमः ॥
उत्तर में— ॐ सं सोममण्डलायनमः ॥
ईशान में— ॐ अं अग्निमण्डलायनमः ॥
मध्य में— ॐ सूं सूर्यमण्डलायनमः ॥

॥ पुनः पूर्वादि क्रम से ॥

पूर्व में— ॐ रां दीप्तायैनमः ॥
आग्नेय में— ॐ रीं सूक्ष्मायैनमः ॥
दक्षिण में— ॐ रूं जयायैनमः ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नैऋंत्य में— ॐ रें भद्रायैनमः ।।
पश्चिम में— ॐ रैं विभूत्यैनमः ।।
वायव्य में— ॐ रों विमलायैनमः ।।
उत्तर में— ॐ रौं अमोघायैनमः ।।
ईशान में— ॐ रं विद्युतायैनमः ।।
मध्य में— ॐ रः सर्वतोमुख्यैनमः ।।

ॐ ब्रह्मविष्णशिवात्मकाय सौरपीठायनमः ।।

इतिपीठपूजादेवता समाप्ताः ।।

यहां तक पीठ पूजा देवताओं का पूजनादिकार्यक्रमचला—अव आगे आवरण देवताओं का कार्यक्रम आरम्भ हो रहा है ।

— त्रिकोण में —

१– पूर्वकोण में— ॐ गायत्र्यैनमः ।
२– निर्ऋतिकोण में— ॐ सावित्र्यैनमः ।
३– वायुकोण में— ॐ सरस्वत्यैनमः ।
४– मव्य में— ॐ ब्रह्मणेनमः ।
५– मध्य में— ॐ विष्णवेनमः ।
६– मध्य में— ॐ रुद्रायनमः ।

इन देवताओं का पूजन करके पुष्पाञ्जलि लेकर "अभीष्टसिद्धिम्मेदेहि शरणागतवत्सले ।। भक्त्या समर्पयेतुभ्यम् प्रथमावरणार्चनम् ।।१।। इतना कहकरके पुष्पाञ्जलि देकर "पूजितास्तर्पिताःसन्तु" यह कह कर प्रथमावरण देवता पूजनादि कर्म समाप्त करे ।

।। इतिप्रथमावरणविवेचनम् ।।

अथ प्रथम अष्टदल में द्वितीयावरण देवता प्रारम्भ हैं—

७– पूर्व में— आदित्यायनमः ।
८– दक्षिण में— ॐ भानवेनमः ।
९– पश्चिम में— ॐ भास्करायनमः ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१०– उत्तर में— ॐ रवयेनमः ।

११– आग्नेय में— ॐ उषायैनमः ।

१२– निर्ऋति में— ॐ प्रज्ञायैनमः ।

१३– वायुकोण में— ॐ प्रभायैनमः ।

१४– ईशानकोण में— ॐ सन्ध्यायैनमः ।

इस प्रकार द्वितीयावरण देवताओं का पूजन कर पुष्पाञ्जलि लेकर "अभीष्टसिद्धिम्भेदेहि शरणागतवत्सले ।। भक्त्या समर्पयेतुभ्यन् द्वितीयावरणार्चनम्" इतना कह करके पुष्पाञ्जलि देकर "पूजितास्तर्पिताः सन्तु" यह कह कर द्वितीयावरणदेवतापूजनादिकर्मसमाप्तकरे ।

।। इतिद्वितीयावरणविवेचनम् ।।

अब यहाँ से तृतीयावरणदेवताआरम्भहोंगेषट्कोणमें—

१५– आग्नेय में— ॐ ब्रह्मणेहृदयायनमः ।

१६– नैर्ऋत्य में— ॐ विष्णवे शिरसे स्वाहा ।

१७– वायुकोण में— ॐ रुद्रायशिखायैवषट् ।

१८– ईशान कोण में— ॐ ईश्वरायकवचायहुँ ।

१९– पूर्व दिशा में— ॐ सदाशिवायनेत्रत्रयायवौषट् ।

२०– पश्चिम दिशा में— ॐ सर्वात्मनेनमः अस्त्रायफट् ।

इस प्रकार तृतीयावरण देवताओं का पूजन कर–पुष्पाञ्जलि लेकर "अमीष्टसिद्धिम्मेदेहिशरणागतवत्सले ।। भक्त्या समर्पयेतुभ्यन्तृतीयावरणार्चनम् ।।३।। इतना कहकर पुष्पाञ्जलि देकर "पूजितास्तर्पिताः सन्तु" यह कहकर तृतीयावरण देवता पूजनादिकर्मसमाप्त करे ।

।। इति तृतीयावरण विवेचनम् ।।

यहाँ से आगे चतुर्थावरणदेवताआरम्भहोंगेवर्तुले (गोलवृत्त में)—

२१– पूर्व में— ॐ प्रह्लादिन्यैनमः ।

२२– अग्निकोण में— ॐ प्रभायैनमः ।

२३– दक्षिण में— ॐ नित्यायैनमः ।

२४– निर्ऋतिकोण में— ॐ विश्वम्भरायैनमः

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२५– पश्चिम में— ॐ विशालिन्यैनमः ।

२६– वायुकोण में— ॐ प्रभावत्यैनमः ।

२७– उत्तर में— ॐ जयायैनमः ।

२८– ईशान कोण में— ॐ शान्त्यैनमः ।

इस प्रकार चतुर्थावरण देवताओं का पूजन कर– पुष्पाञ्जलि लेकर 'अभीष्टसिद्धिम्मेदेहि शरणागत वत्सले भक्त्या समर्पयेतुभ्यञ्चतुर्थावरणार्चनम् ॥४॥ इतना कह कर "पूजितास्तर्पिता:सन्तु" यहकहकर चतुर्थावरणदेवतापूजनादिकर्म समाप्त करे ।

॥ इति चतुर्थावरण विवेचनम् ॥

आगे पञ्चमावरण देवताप्रारम्भहोंगेवृत्तकेकुछवाहरमें —

२९– पूर्व में— ॐ कान्त्यैनमः ।

३०– अग्निकोण में— ॐ दुर्गायैनमः ।

३१– दक्षिण में— ॐ सरस्वत्यैनमः ।

३२– निर्ऋतिकोण में— ॐ विश्वरूपायैनमः ।

३३– पश्चिम में — ॐ विशालायैनमः ।

३४– वायव्य कोण में— ॐ ईशायैनमः ।

३५– उत्तर में— ॐ चापिन्यैनमः ।

३६– ईशान में— ॐ विमलायैनमः ।

इस प्रकार पंचमावरण देवताओं का पूजन कर– पुष्पाञ्जलि लेकर "अभीष्टसिद्धिम्मेदेहि शरणागतवत्सले ॥ भक्त्यासमर्पयेतुभ्यम्पञ्चमावरणार्चनम् ॥५॥ इतना कहकर पञ्चमावरण देवता पूजनादि कर्म समाप्त करे ।

॥ इति पञ्चमावरणविवेचनम् ॥

अथ षष्ठावरण देवता प्रारम्भ होंगे द्वितीयाष्टदलमूलमें—

३७– पूर्व में— ॐ अपहारिण्यैनमः ।

३८– अ० को० में— ॐ सूक्ष्मायैनमः ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३९– दक्षिण में— ॐ विश्वयोन्यैनमः।

४०– निर्ऋत में— ॐ जयावहायैनमः।

४१– पश्चिम में— ॐ पद्मालयायैनमः।

४२– वायव्य कोण में— ॐ परायैनमः।

४३– उत्तर में— शोभायैनमः।

४४– ईशान में— ॐ पद्मरूपायैनमः।

इस प्रकार षष्ठावरण देवताओं का पूजन कर पुष्पाञ्जलि लेकर "अभीष्टसिद्धिम्मेदेहि शरणागतवत्सले। भक्त्या समर्पयेतुभ्यं षष्ठकावरणार्चनम् ॥६॥ इतना कह करके पुष्पाञ्जलि देकर पूजितास्तर्पितासन्तु" यह कह कर षष्ठकावरण देवता पूजनादि कर्म समाप्त करे।

आगे सप्तमावरण देवता प्रारम्भ होंगे द्वितीयअष्टदलके मध्य में—

४५– पूर्व में— ॐ अं ब्राह्मयैनमः।

४६– अग्निकोण में— ॐ ईंमाहेश्वर्य्यैनमः।

४७– दक्षिण में— ॐ ॐ कौमार्यैनमः।

४८– निर्ऋति कोण में— ॐ ऋ वैष्णव्यैनमः।

४९– पश्चिम में— ॐ लृ वाराह्यैनमः।

५०– वायव्यकोण में— ॐ ऐं इन्द्राण्यैनमः।

५१– उत्तर में— ॐ औं चामुण्डायैनमः।

५२–ईशानकोण में— ॐ अः महालक्ष्म्यैनमः।

इस प्रकार सप्तमावरण देवताओं का पूजन कर पुष्पाञ्जलि लेकर "अभीष्टसिद्धिम्मेदेहि शरणागतवत्सले ॥ भक्त्या समर्पयेतुभ्यं सप्तमावरणार्चनम् ॥ इतना कह कर पुष्पाञ्जलि देकर पूजितास्तर्पिताःसन्तु" यह कहकर सप्तमावरणदेवतापूजनादि कर्म समाप्त करे।

॥ इतिसप्तमावरण विवेचनम् ॥

आगे अष्टम आवरणकेदेवताप्रारम्भ होंगे द्वितीय अष्टदल के अग्रभाग में-

५३– पूर्व में—ॐ सों सोमायनमः।

५४– अग्निकोण में— ॐ भौं भौमायनमः।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

५५– दक्षिण में— ॐ वुं वुधायनमः ।
५६– नैर्ऋत्य में— ॐ वृं वृहस्पतयेनमः ।
५७– पश्चिम में— ॐ शुं शुक्रायनमः ।
५८– वायव्य में— ॐ शं शनैश्चरायनमः ।
५९– उत्तर में— ॐ रां राहवेनमः ।
६०– ईशान में— ॐ कें केतवे नमः ।

इस प्रकार अष्टमावरण देवताओं का पूजन कर पुष्पाञ्जलि लेकर "अभीष्टसिद्धिम्मेदेहि शरणागतवत्सले। भक्त्या समर्पयेतुभ्यमष्टमावरणार्चनम् ॥ इतना कह कर पुष्पाञ्जलि देकर "पूजितास्तर्पिताः सन्तु यह कहकर अष्टमावरणदेवतापूजनादि कर्म समाप्त करे।

॥ इति अष्टमावरणदेवता समाप्त ॥

आगे नवमावरण देवता प्रारम्भ होंगे भूपुर में—

६१– पूर्व में— ओं लं इन्द्रायनमः ।
६२– अग्निकोण में—ॐ रं अग्नेयनमः ।
६३– दक्षिण में— ॐ मं यमायनमः ।
६४– निर्ऋति में— ॐ क्षं निर्ऋतयेनमः ।
६५– पश्चिम में— ॐ वं वरुणायनमः ।
६६– वायव्य में— ॐ वां वायवेनमः ।
६७– उत्तर में— ॐ सों सोमायनमः ।
६८– ईशान में— ॐ ईं ईशानायनमः ।
६९– ईशान पूर्वमध्य में— ॐ आं ब्रह्मणेनमः ।
७०– निर्ऋति पश्चिम मध्य में— ॐ अं अनन्तायनम ।

इस प्रकार नवमावरण देवताओं का पूजन कर—पुष्पाञ्जलि लेकर "अभीष्टसिद्धिम्मेदेहि शरणागतवत्सले। भक्त्या समर्पयेतुभ्यन्नवमावरणार्चनम्। इतना कहकर पुष्पाञ्जलि देकर "पूजितास्तर्पिताः सन्तु" यह कहकर नवमावरण देवता पूजनादि कर्म समाप्त करे।

॥ इति नवमावरणविवेचनम् ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अथ दशम आवरण के देवता प्रारम्भ होंगे— भूपुरकेकुछहीदूर—

७१– पूर्व में— ॐ वं वज्रायनम: ।
७२– आग्नेय में— ॐ शं शक्तयेनम: ।
७३– दक्षिण में— ॐ दं दण्डायनम: ।
७४– नैर्ऋत्य में— ॐ खं खड्गायनम: ।
७५– पश्चिम में— ॐ पं पाशायनम: ।
७६– वायव्य में— ॐ अं अङ्कुशायनम: ।
७७– उत्तर में— ॐ गं गदायैनम: ।
७८– ईशान में— ॐ त्रि त्रिशूलायनम: ।
७९– ईशान पूर्व मध्य में— ॐ पं पद्मायनम: ।
८०– निर्ऋति पश्चिम मध्य में— ॐ चं चक्रायुधायनम: ।

॥ इति दशम आवरण देवता समाप्त ॥

इत्यावरण देवता: स्थापयेत् तदनन्तरम्प्रपूजयेत् ।

इस प्रकार आवरण देवताओं को स्थापित करके पूजन करे पश्चात् पुष्पाञ्जलि लेकर "अभीष्टसिद्धिम्मेदेहि शरणागतवत्सले । भक्त्यासमर्पयेतुभ्यन्दशमावरणार्चनम्" यह पढ़कर पुष्पाञ्जलि देकर 'पूजितास्तर्पिता: सन्तु' ऐसा कहकर दशमावरण देवता पूजन समाप्त करे ।

इत्थमावरणैर्देवीन्दशभि: परिपूजयेत् । धर्मार्थकाममोक्षाणाम्भोक्तास्याद्द्विज सत्तम: ।

विशेष संङ्केत—इस प्रकार समस्त आवरण पूजन विधिवत् करने के पश्चात्–घटस्थापनादि कार्य करके भगवती श्री गायत्रीदेवी की मूर्ति स्वर्णमयी या रजतमयी आदि किसी भी धातु की हो उसका प्राण प्रतिष्ठा पर्यन्त सभी संस्कार करके विधिवत् षोडशोपचार पूजन करे (यदि धातुमयी मूर्ति न हो तो चित्र में भी पूजनादि कार्य करे)

पश्चात् जप करने के पूर्व चौबीस मुद्रायें प्रदर्शित करके श्री गायत्री शाप मोचन विधान कर पश्चात् शान्त चित्त से श्री गायत्रीदेवी में तन्मयता होते हुये जप करना चाहिये या ब्राह्मणों द्वारा करवाना चाहिये । उत्तम दो हजार अधिक तीन हजार तक पर्याप्त है–आगे जितनी शक्ति हो करे । इतना ध्यान रहे कि अनुष्ठान पर्यन्त जप में

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

न्यूनता या वृद्धि न हो जितना प्रथम दिन होगा उतना ही अन्तिम समाप्ति पर्यन्त होगा। भूमिशयन–हविष्यान्न भक्षण–ब्रह्मचर्य्य व्रत–स्पृश्यास्पृश्यादि नियमों का पालन हो। चाहे पण्डितों द्वारा करवाये या स्वयं करें। दीप अवश्य जलाकर साक्षीभूत रखना चाहिये उसका भी पूजनादि करना चाहिये।

॥ आवश्यक सङ्केत ॥

जिन साधकों को २४ लक्ष या इससे अधिक गायत्री का अनुष्ठान स्वयं करना हो या ब्राह्मणों द्वारा करवाना हो तो उनको भूतशुद्धि–मातृकान्यास–हृदयन्यास–करन्यास तथा पदन्यास–वर्णन्यास–पीठन्यास आदि तथा पीठपूजा–मानसिक व वाह्य देवता पूजाआवरण देवपूजादि तथा गायत्री शापोद्धारादि कार्यक्रम करना चाहिये या करवाना चाहिये। उसमें भी केवल प्रारम्भ में ही सब काम करना या करवाना चाहिये दैनिक नहीं। यदि एक ही स्थान में होना हो तो यथाशक्ति ऊपर लिखे कार्यक्रम को करे।

चौवीस लक्ष या इससे अधिक का जहाँ अनुष्ठान हो वहीं के लिये यह सब नियम हैं। जहाँ अनुष्ठान नहीं होना है साधारण नियम से श्री गायत्री जप करना है वहाँ के लिये कोई भी नियम नहीं है। वहाँ भूतशुद्धि–न्यास–पीठादि पूजा–आवरण पूजादि–शापोद्धारादि कुछ नहीं करना चाहिये। केवल सन्ध्या के प्रसङ्ग में गायत्री मन्त्र का जप करे। केवल शुद्ध होकर शान्त चित्त से जप करे। ब्रह्मा–विश्वामित्र–वशिष्ठ इनके स्मरणमात्र से ही गायत्री शाप का उद्धार हो जाता है। यहीं शास्त्र मत है। न्यास करे या न करे–केवल श्री गायत्री मन्त्र जप करे। यह भी मत शास्त्र मत है।

गायत्री जप करने के पूर्व–सुमुख–सम्पुट–वितत–विस्तृत–द्विमुख-त्रिमुख–चतुर्मुख – पञ्चमुख–षण्मुख – अधोमुख – व्यापकाञ्जलि–शकट यमपाश–ग्रथित–उन्मुखोन्मुख–प्रलम्ब–मुष्टिक–मत्स्य–कूर्म- वराह–सिंहाक्रान्त–महाक्रान्त–मुद्गर–पल्लव। इन चौवीस मुद्रा प्रदर्शित करने का तथा गायत्री जप के अन्त में सुरभि–ज्ञान–वैराग्य–योनिकूर्म–पङ्कज–लिङ्ग-निर्वाण इन आठ मुद्रायें प्रदर्शित करने का महत्व है। किन्तु यदि मुद्रायें प्रदर्शित न भी की जायें तो भी कोई दोष नहीं है। जप के वाद श्री गायत्री कवच का पाठ करे।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

॥ गायत्रीशापमोचनविधि ॥

ब्रह्मा-वशिष्ठ तथा विश्वामित्र-इन तीन महर्षियों ने गायत्री को शाप दे दिया है- अतएव शाप का विमोचन करके गायत्री का जप करना चाहिए । शाप देने की कथा पौराणिक है ।

विधि—दहिने हाथ में जल लेकर- ॐ अस्य श्री ब्रह्मशाप-विमोचन मन्त्रस्य निग्रहानुग्रहकर्ता प्रजापतिः ऋषि;, कामदुघा गायत्री छन्दः, ॐ ब्रह्मशापमोचन गायत्री शक्तिर्देवता ब्रह्मशापमोचनार्थे विनियोगः । इतना कहकर हाथ का जल पृथ्वीपर (किसी पात्र में) छोड़कर शान्त चित्त से ब्रह्मशापमोचन मन्त्र का उच्चारण करे यथा—

सवितुः ब्रह्मोमेत्युपासनात् तत्तद्ब्रह्मविदोविदुस्ता प्रयतन्ति धीराः । सुमनसावाचाममाग्रतः । ॐ देविगायत्रित्वं ब्रह्मशाप विमुक्ता भव ॥

॥ इति ब्रह्मशापविमोचन ॥

आगे विश्वामित्र शाप विमोचन विधि भी पूर्व क्रमानुसार कीजिये—यथा- दाहिने हाथ में जल लेकर—ॐ विश्वामित्र शापविमोचन-मन्त्रस्यनूतनसृष्टिकर्ता विश्वामित्र ऋषिः- वाग्दोहागायत्रीछन्दः, भुक्ति-मुक्तिप्रदा विश्वामित्रानुग्रहीता गायत्रीशक्तिः, सवितादेवता, विश्वामित्र शापमोचनार्थे जपेविनियोगः । इतना कहकर हाथ का जल पृथ्वी पर रक्खे हुये किसी पात्र में छोड़कर शान्तचित्त से आगे लिखे विश्वामित्र शापविमोचन मन्त्र पढ़े ।

मन्त्र—तत्वानि चाङ्गेष्वग्नि चितोधियांसः, त्रिगर्भायदुद्भवां देवाश्चोचिरे विश्वसृष्टिं तां कल्याणीमिष्टकरींप्रपद्ये यन्मुखान्निःसृतो वेदगर्भः । ॐ गायत्रि त्वं विश्वामित्रशापाद् विमुक्ताभव ॥

॥ इति विश्वामित्रशापविमोचन ॥

वशिष्ठशापविमोचन विधि का भी क्रम पूर्ववत् करना चाहिये । यथा—दाहिने हाथ में जल लेकर—ॐ वशिष्ठशापविमोचन

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मन्त्रस्य वशिष्ठऋषिः, विश्वोद्भवोगायत्रीछन्दः, वशिष्ठाऽनुग्रहीता गायत्रीशक्तिर्देवता, वशिष्ठशाप विमोचनार्थे विनियोगः—इतना कहकर पृथ्वी पर रक्खे पात्र में हाथ का जल छोड़कर शान्त चित्त से वशिष्ठ शापविमोचनमन्त्र कहना चाहिये।

मन्त्र—तत्वानि चाङ्गेष्वग्निचितोधियांसः ध्यायन्ति विष्णोरा-युधानि विभ्रत्। जनानता सोपरमं च शश्वत्। गायत्री मासाच्छुरनु-त्तमंच धाम। ॐ गायत्रि त्वं वशिष्ठशापाद् विमुक्ता भव।

॥ इति वशिष्ठशापविमोचन ॥

इसके वाद गायत्री की प्रार्थना करे—

प्रार्थना — सोऽहमर्कमयञ्ज्योतिरर्को ज्योतिरहं शिवः।
आत्मज्योतिरहं शुक्लं शुक्लं ज्योतिरसोऽहमोम्॥
अहो विष्णुमहेशेशे ? दिव्ये सिद्धिसरस्वति !।
अजरे अमरे चैव दिव्ययोने नमोस्तुते॥

शुद्ध गायत्री का ध्यान करना चाहिये—

ध्यान—यद्देवासुरपूजितंपरतरं सामर्थ्यतारात्मकम् पुन्नागाम्बुज-पुष्प-नाग-वकुलैः केशैशुकैरर्चितम्। नित्यन्ध्यान समस्तदीप्तिकरणङ्का-लाग्निरुद्दीपनन्तत्संहार करन्नमामिसततम्पाताल संस्थम्मुखम्।

इतिध्यानम्।

सङ्केत— ध्यान करने के वाद सावधान मन से गायत्री का जप करना चाहिये।

जपान्ते सामान्यार्घ्योदकङ्गृहीत्वा —

गुह्याति गुह्यगोप्त्रीत्वङ्गृहाणास्मत्कृतञ्जपम्।
सिद्धिर्भवतु मे देवि त्व प्रसादान्महेश्वरि।'

अनेन यथा शक्ति भगवत्याः श्रीगायत्रीदेव्याः प्रीतये गायत्री मूलमन्त्रस्य कृतेनजपकर्मणा श्री वेदमाता भगवती गायत्री प्रीयतां नमम।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इति जलम्भगवत्या श्री गायत्री देव्या वामहस्ते समर्प्यंस्तोत्र पाठादि कुर्यात् ।

अर्घ्यजल लेकर ऊपर लिखी प्रार्थना करता हुआ प्रीयतांनमम यहाँ तक पढ़कर श्रीभगवती गायत्री देवी को अर्पण करे—पश्चात् श्री गायत्री कवच-स्तोत्र आदि का पाठ करे ।

सङ्केत—कवच के पूर्व— सुरभि १ ज्ञान २ वैराग्य ३ योनि ४ कूर्म ५ पङ्कज ६ लिंग ७ निर्वाण ८ ये मुद्रायें प्रदर्शित करना चाहिये । पश्चात् कवच का पाठ करे ।

यदि मुद्रायें प्रदर्शित करना न मालूम हो तो हाथ जोड़कर कवच पाठ प्रारम्भ करे ।

वशिष्ठसंहिता में तो ऐसा भी लिखा है कि "जपारम्भे च हृदयञ्जपान्ते कवचम्पठेत् ॥ अर्थात् जप के पूर्व गायत्री हृदय का पाठ करे और जपान्ते में गायत्री कवच का पाठ करे । किन्तु आजकल आचार्य्य लोगों की यही प्रायः परम्परा है कि जपान्त में कवच तथा हृदय का पाठ करते हैं ।

॥ अथ गायत्रीकवचम् ॥

ॐ अस्य श्रीगायत्री कवचस्य ब्रह्माऋषिर्गायत्री छन्दो गायत्री-देवता ॐ भूःवीजम्, भुवःशक्ति, स्वः कीलकम्, गायत्रीप्रीत्यर्थ जपेविनियोगः ।

दाहिने हाथ में जल लेकर ऊपर लिखा विनियोग पढ़कर जल को पृथ्वी पर रक्खे पात्र में छोड़ देना चाहिए ।

ध्यानम्—

पञ्चवक्त्रान्दशभुजां सूर्यकोटिसमप्रभाम् ।
सावित्रींब्रह्मवरदाञ्चन्द्रकोटि-सुशीतलाम् ॥१॥
त्रिनेत्रांसितवक्त्राञ्चमुक्ताहारविराजितां ।
वराभयाङ्कुश-कशा-हेमपात्राक्षमालिकाः ॥२॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शङ्ख-चक्राब्ज- युगलङ्क राभ्यान्दधतीम्पराम्
सित-पङ्कज-संस्थाञ्च हंसारुढ़ांसुखस्मिताम् ।
ध्यात्वैवम्मनसाम्भोजेगायत्रीकवचञ्जपेत् ॥१३॥

कवचम्—

विश्वामित्र महाप्राज्ञ गायत्री कवचंश्शृणु ।
यस्यविज्ञान मात्रेण त्रैलोक्यंवशयेत्क्षणात् ॥१॥
सावित्री मेशिरः पातु शिखायाममृतेश्वरी ।
ललाटं ब्रह्मदैवत्या भ्रुवौमे पातु वैष्णवी ॥२॥
कर्णौ मे पातु रुद्राणी सूर्य्यासावित्रिकाम्बिके ।
गायत्रीवदनम्पातु शारदादशनच्छदौ ॥३॥
द्विजान् यज्ञप्रियापातु रसनायां सरस्वती ।
साङ्ख्यायनी नासिकामे कपोलौचन्द्रहासिनी ॥४॥
चिवुकंवेदगर्भाच कण्ठम्पात्वघनाशिनी ।
स्तनौमेपातु चेन्द्राणी हृदयंब्रह्मवादिनी ॥५॥
उदरं विश्वभोक्त्रीच नाभौपातु सुरप्रिया ।
जघनन्नारसिंही च पृष्ठं ब्रह्माण्डधारिणी ॥६॥
पार्श्वौ मे पातु पद्माक्षी गुह्यङ्गोगोप्त्रिकाऽवतु ।
जङ्घयोः पातु चाक्षोभ्या गुल्फयोर्ब्रह्मशीर्षका ॥७॥
सूर्यपदद्वयम्पातु चन्द्रा पादाङ्गुलीषुच ।
सर्वाङ्गंवेदजननी पातु मे सर्वदाऽनघा ॥८॥
इत्येतत्कवचं ब्रह्मन् ? गायत्र्याः सर्वपावनम् ।
पुण्यम्पवित्रम्पापघ्नं सर्व रोगनिवारणम् ॥९॥
त्रि सन्ध्यंयः पठेद् विद्वान् सर्वान् कामानवाप्नुयात् ।
सर्वशास्त्रार्थतत्वज्ञः सभवेद् वेदवित्तमः ॥१०॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सर्वयज्ञफलम्प्राप्य ब्रह्मान्ते समवाप्नुयात् ।
प्राप्नोति जपमात्रेण पुरुषार्थश्चितुर्विधान् ॥११॥

इति विश्वामित्र संहितोक्तङ्गायत्रीकवचंसम्पूर्णम् ॥

अथ श्री गायत्री कवच का हिन्दी भाषानुवाद लिखा जा रहा है ।

अर्थ—जो गायत्री देवी पांच मुख वाली तथा दशहस्त वाली हैं जिसका तेज करोड़ों सूर्य के समान है । तथा करोड़ों चन्द्र के सदृश शीतल है, जो ब्रह्मा आदि देवताओं को भी वर देने वाली हैं । जिनके तीन नेत्र हैं तथा जिनका मुख स्वच्छ हैं । जो मोतियों की माला से विभूषित हैं जिनके दोनो हाथों में वर-अभय-अंकुश-कशा-स्वर्णपात्र-अक्षमाला शंख, चक्र तथा ध्वज विराजमान हैं, जो परब्रह्म स्वरूपिणी हैं, जो श्वेत कमल पर विराज रही हैं । सफेद हंस जिनका वाहन है, प्रसन्नता से कुछ मुस्करा रहीं हैं इस प्रकार गायत्री देवी का ध्यान हृदय कमल में करे । ध्यान के पश्चात् गायत्री कवच का पाठ करे । ३॥

कवच—ब्रह्मा जी ने विश्वामित्र से कहा कि हे महाबुद्धि वाले विश्वामित्र ? तुम गायत्री कवच को सुनो । जिसके केवल पाठ मात्र से ही साधक लोकत्रय को अपने वश में कर सकता हैं ॥१॥ सावित्री मेरे शिर की-अमृतेश्वरी शिखा की-ब्रह्म दैवत्या ललाट की, वैष्णवी दोनों भ्रुवों की रक्षा करें ।२॥ रुद्राणी दोनों कानों की, सूर्य में निरन्तर रहने वाली (सूर्या) दोनों नेत्रों की, गायत्री मुख की तथा शारदा मसूड़ों की रक्षा करें ॥३॥ यज्ञप्रियादातों की, सरस्वती जीभ की, साङ्ख्यायनी नाक की, तथा चन्द्रहासिनी कपोल की रक्षा करें ॥४॥ वेदगर्भा चिवुक की रक्षा करे पापनाशनी कण्ठ की, इन्द्राणीस्तन की, और ब्रह्मवादिनी हृदय की रक्षा करें ॥५॥ विश्व भोक्त्री पेट की, सुरप्रिया नाभि की, नारसिंही जघन की ब्रह्माण्ड धारिणी पीठ की रक्षा करें ॥६॥ पद्माक्षी दोनों पार्श्व की, गोप्त्रिका

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गुप्तस्थान की, ॐ काररूपा दोनों ऊरू की, तथा सन्ध्यात्मिका दोनों घुटनों की रक्षा करें ॥७॥ अक्षोभ्या दोनों जांघ की, ब्रह्मशीर्षका गुल्फ की रक्षा करे सूर्या दोनों पैरों की, तथा चन्द्रा दोनों पैरों के अंगुलियों की रक्षा करें ॥८॥

सम्पूर्ण पापों का नाश करने वाली वेदजननी हमारे सम्पूर्ण अंगों की सदा रक्षा करें ॥

ब्रह्माजी ने कहा—हे विश्वामित्र ! इस प्रकार यह गायत्री कवच सदैव साधना करने वाले को पवित्र करता है ॥९॥ यह गायत्री कवच पुण्य-पवित्र-पापों को नाश करने वाला तथा समस्त रोगों को दूर करने वाला है, जो विद्वान् तीनों काल में इस गायत्री कवच का पाठ करते हैं उनका सम्पूर्ण मनोरथ पूर्ण हो जाता है ॥१०॥ गायत्री कवच का पाठकरने वाला सम्पूर्ण शास्त्रों के तत्व का जानने वाला तथा वेद ज्ञाता हो ज्ञाता है। और उसे सम्पूर्ण यज्ञों के फलों की प्राप्ति होती है तथा अन्त में ब्रह्म पद को प्राप्त करता है ॥११॥ तथा पाठक धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष रूप चारों पुरुषार्थ की प्राप्ति केवल जप मात्र से ही करता है ॥१२॥

इति विश्वामित्र संहिता में कथित गायत्री कवच समाप्त ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

।। गायत्री हृदयम् ।।

ॐ अस्यगायत्री हृदयस्य नारायणऋषिः– गायत्रीच्छन्दः, परमेश्वरी गायत्री देवता, गायत्री हृदयजपे विनियोगः ।

नारद उवाच–भगवन् देवदेवेश भूतभव्य जगत्प्रभो ।। कवचञ्च श्रुतन्दिव्यङ्गायत्रीमन्त्र विग्रहम् ॥१॥ अधुना श्रोतुमिच्छामि गायत्री हृदयम्परम् । यद्धारणाद्भवेत्पुण्यङ् गायत्रीजपतोऽखिलम् ॥२॥ श्रीनारायण उवाच ॥ देव्याश्चहृदयम्प्रोक्तन्नारदाथर्वणे स्फुटम् ॥ तद्हंसम्प्रवक्ष्यामि रहस्यातिरहस्यकम् ॥३॥ विराड्रूपाम्महादेवीङ्गायत्रींवेदमातरम् । ध्यात्वातस्यास्त्वथाङ्गेषु ध्यायेदेताश्चदेवताः॥४॥ पिण्डं ब्रह्माण्डयोरैक्याद्भावयेत्स्वतनौतथा ॥ देवीरूपेनिजेदेहे तन्मयत्वायसाधकः ॥५॥ नादेवोऽभ्यर्चयेद्देवमितिवेदविदोविदुः । ततोऽभेदायकायेस्वे भावयेद्देवताइमाः । ॥६॥ अथैतत्संप्रवक्ष्यामि तन्मयत्वमथोभवेत् । गायत्रीहृदयस्यास्याप्यहमेवऋषिः स्मृतः ॥७॥ गायत्रीछन्दउद्दिष्ठन् देवता परमेश्वरी । पूर्वोक्तेनप्रकारेणकुर्यादङ्गानिषट्क्रमात् । आसनेविजनेदेशेध्यायेदेकाग्रमानसः ॥८॥

।। गायत्री हृदयम् ।।

ॐ अस्यगायत्रीहृदयस्य नारायणऋषिः गायत्रीच्छन्दः परमेश्वरीगायत्रीदेवता गायत्रीहृदयजपे विनियोगः ।

।। अथाङ्गन्यासः ।।

द्यौर्मूर्ध्निदैवतम् ।। दन्तप ङ्क्तावश्विनौ ।। उभेसन्ध्ये चोष्ठौ ।। मुखमग्निः ॥ जिह्वासरस्वती ।। ग्रीवायान्तु बृहस्पतिः ।। स्तनयोर्वसवोऽष्टौ ।। बाह्वोर्मरुतः ।। हृदयेपर्जन्यः ।। आकाशमुदरम् ।। नाभावन्तरिक्षम् ।। कट्योरिन्द्राग्नी ।। जघनेविज्ञानघनः प्रजापतिः ।। कैलाशमलयेउरः ।। विश्वेदेवाजान्वोः ।। जङ्घायाङ्कौशिकः ।। गुह्यमयने ।। ऊरूपितरः ।। पादौपृथ्वी ।। वनस्पतयोऽङ्गुलीषु ।। ऋषयोरोमाणि ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नखानिमुहूर्तानि ॥ अस्थिषुग्रहा: ॥ अस्टङ्मांसमृतव: ॥ संवत्सरावैनिमिषम् ॥ अहोरात्रावादित्यश्चन्द्रमा: ॥ प्रवरान्दिव्याङ्गायत्रींसहस्रनेत्रांशरणमहम्प्रपद्ये ॥

तत्सवितुर्वरेण्यायनम: ॥ तत्पूर्वाजायनम: ॥ तत्प्रातरादित्यायनम: ॥ तत्प्रातरादित्यप्रतिष्ठायैनम: ॥…

प्रातरधीयानोरात्रिकृतम्पापन्नश्यति ॥ सायमधीयानोदिवसकृतम्पापन्नश्यति ॥ सायम्-प्रातरधीयानोऽपापो भवति ॥ सर्वतीर्थेषु स्नातोभवति ॥ सर्वैर्देवैर्ज्ञातोभवति ॥ अवाच्यवचनात् पूतोभवति ॥ अभक्ष्यभक्षणात् पूतोभवति ॥ अचोष्यचोषणात् पूतोभवति ॥ असाध्यसाधनात् पूतोभवति ॥ दुष्प्रतिग्रह शतसहस्रात् पूतोभवति ॥ सर्वप्रतिग्रहात्पूतोभवति ॥ पंक्तिदूषणात्पूतोभवति ॥ अनृतबचनात्पूतोभवति ॥ अब्रह्मचारी ब्रह्मचारीभवति ॥ अनेनहृदयेनाधीतेन क्रतुसहस्रेणेष्टम्भवति ॥ षष्टिशतसहस्र गायत्र्याजाप्यानिफलानिभवन्ति ॥ अष्टौब्राह्मणान् सम्यग् ग्राहयेत् ॥ तस्यसिद्धिर्भवति ॥

यइदन्नित्यमधीयानो ब्राह्मण: प्रात: शुचि: सर्वपापै: प्रमुच्यते इति ॥ ब्रह्मलोकेमहीयते । इत्याहभगवान् श्रीनारायण: ।

इतिश्रीदेवी भागवते महापुराणेऽथर्ववेदोक्तङ्गायत्रीहृदयम् ॥

गायत्रीहृदय का हिन्दी भाषानुवाद

अर्थ—दाहिने हाथ में जल लेकर– ॐ अस्य गायत्री हृदयस्य नारायण ऋषि: गायत्रीच्छन्द: परमेश्वरी गायत्री देवता–गायत्री हृदय जपेविनियोग:, यह कहकर जल पृथ्वी पर रक्खे पत्र में छोड़ देवे । गायत्री हृदय का नारायण ऋषि है । गायत्री छन्द है । परमेश्वरी इष्टदेवता है । आगे अंगन्यासका क्रम बतलाया जा रहा है ।

यथा–मस्तक में द्यौ सम्बन्धी देवता की भावना करे । दतपंक्ति में अश्विनी कुमारों की दोनों ओठों में सन्ध्याओं की । मुख में अग्नि की-जिह्वा में सरस्वती की-ग्रीवा में बृहस्पति की । दोनों स्तनों में

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आठों वसुओं की। दोनों भुजाओं में मरुद्गणों की। हृदय में पर्जन्य की-उदर में आकाश की। नाभि में अंतरिक्ष की। दोनों कटि में इन्द्र और अग्नि की। पेडू में प्रजापति की। एक जांघ में कैलाश और मलयगिरि की। दोनों जानुओं में विश्वे देवों की। पिंडलियों में कौशिक की। गुदा में उत्तरायण एवं दक्षिणायन अधिष्ठातृ देवता की। दूसरी जांघ में पितरों की। पैरों में पृथ्वी की। अंगुलियों में वनस्पति की-रोमां में ऋषियों की। नखों में मुहूर्तों की। हड्डियों में ग्रहों की-रुधिर और मांस में ऋतुओं की भावना करे। संवत् जिनका एक पल है जिसकी आज्ञा से सूर्य तथा चन्द्रमा दिन रात्रि का विभाजन करते हैं तथा जो दिव्य-परम पूज्य एवं सहस्रों नेत्रों से शोभा वाली भगवती गायत्री हैं उनकी मैं शरण ग्रहण करता हूँ। ॐ सूर्य के उस श्रेष्ठ तेज को प्रणाम है। पूर्व दिशा में उदय होने वाले भगवन् सूर्य को प्रणाम है। प्रातः कालीन भगवन् सूर्य को नमस्कार है। आदित्य मण्डल में प्रतिष्ठा पाने वाली भगवती गायत्री को नमस्कार है। प्रातःकाल इस गायत्री का ध्यान करने वाला रात्रि में किये हुये पापों का नाश करता हैं। सायंकाल में ध्यान करने वाला दिन कृत पापों का नाश करता है। दोनों समय ध्यान करने वाला निष्पाप हो जाता है। सम्पूर्ण तीर्थों में स्नान तथा सम्पूर्ण देवताओं से परिचित हो जाता है। गायत्री के जप की महिमा से पुरुष अवाच्यवचन से। अभक्ष्य भक्षण से। अभोज्य भोजन से। अचोष्यचोषण से। असाध्य साधन से। सहस्रोंदुष्प्रतिग्रहों से। पंक्तिदूषण से। तथा असत्यवचन से भी कभी अपवित्र नहीं हो सकता है। अब्रह्मचारी में भी ब्रह्मचारी के गुण आ जाते हैं। इस गायत्री हृदय का पाठ करने से हजार यज्ञों का फल मिलता है। साठ लाख गायत्री के जप से जितना फल मिलता है उतने ही फल का देने वाला यह गायत्री हृदय है। गायत्री अनुष्ठान में आठ ब्राह्मणों का वरण करना चाहिए। ऐसा करने से सद्यः सिद्धि प्राप्त होती है जो ब्राह्मण प्रतिदिन प्रातःकाल पवित्र होकर इस गायत्री

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हृदय का पाठ करता है। उसके सम्पूर्ण पाप भस्म हो जाते हैं। और ब्रह्मलोक में उसकी प्रतिष्ठा होती है। यह भगवान् नारायण की अमर वाणी हैं।

इति देवी भागवते महापुराणे द्वादश स्कन्धान्तर्गत चतुर्थ अध्याय में श्री गायत्री हृदय का हिन्दी भाषानुवाद।

तै० आ० प्र० १० अ० २५—श्रीगायत्री गोत्र निर्णयः। अग्नि-र्मुखं ब्रह्माशिरो विष्णुंर्हृदयं रुद्रश्शिखा पृथिवी योनिः प्राणापान व्यानो-दान समाना सप्राणा श्वेतवर्णा साङ्ख्यायन सगोत्रा।

इति—विष्णोर्जनितेति श्रुति।

साङ्ख्यायनो नाम कश्चन ऋषिः—तेन समानङ्गोत्रं यस्यास्सा-साङ्ख्यायनसगोत्रा।

अर्थ—गायत्री का साङ्ख्यान गोत्र है। अथवासाङ्कृत्य।

॥ अथ षोडशाक्षरा गायत्री ॥

ॐ आपोज्योतीरसोमृतम् ॐ ब्रह्मभूर्भुवः स्वरोम्,

॥ अथ षष्ट्यक्षरागायत्री ॥

ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यम् ॐ तत्स-वितुर्वरेण्यम्भर्गोदेवस्य धीमहि धियोयोनः प्रचोदयात् ॐ आपोज्योती-रसोऽमृतं ब्रह्मभूर्भुवःस्वरोम्।

॥ अथ शताक्षरा गायत्री ॥

अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ ए ऐ ओ औ अं अः (१६) (ह्रीं) (१) भूर्भुवःस्वः (४) तत्सवितुर्वरेण्यम्भर्गोदेवस्य धीमहिधियोयोनः प्रचोदयात् (२४) आपोज्योतिरसोऽमृतम्ब्रह्मभूर्भुवः स्वरोम् (१६) परोरजसे सावदों (८) ॐ ॐ ॐ ॐ (४) ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यम् (१२) ॐ ऋग् ॐ यजुः ॐ साम ॐ अथर्व (१३) र (१) ठ (१) समष्टि = १००) इतिशताक्षरा गा०।

वशिष्ठ संहिता में ॐ जातवेदसे इत्यादि मन्त्र के ४३

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अक्षर ।=यम्बकंयजामहे–इत्यादि मंत्र के ३३ अक्षर। त्रिपदा गायत्री के २४ अक्षर कुल १०० अक्षर होते हैं। शताक्षरा गायत्री में अनेक मत हैं ।

॥ गायत्री के तीन स्वरूप ॥

गायत्रीनामपूवाह्ले सावित्रीमध्यमे दिने ॥
सरस्वती च सायाह्ले सैवसन्ध्यात्रिषुस्मृता ॥१॥
गायत्री ब्रह्मरूपास्यात् सावित्रीरुद्ररूपिणी ॥
सरस्वती विष्णुरूपा उपास्यामूर्तिभेदतः ॥२॥

व्याख्या–गायतांत्राणेन गायत्री नाम। सवितृद्योतनात् सावित्रीतिनाम। जगताम्प्रसवनात् वाग्रूपत्वाच्चसरस्वतीतिनाम।

हिन्दी भावार्थ– प्रातःकाल में गायत्री। ब्रह्मरूपा मध्याह्न में सावित्री। रुद्ररूपासायङ्काल में सरस्वती। विष्णुरूपा की उपासना करना चाहिये।

कुछ आचार्यों का मत यों है—

प्रातर्वालाचमध्याह्ने यौवनस्था भवेत्पुनः।
वृद्धा सायम्भगवती चिन्त्यतेमुनिभिः सदा ॥१॥
हंसस्था गरुडारुडा तथावृषभवाहिनी ॥

अर्थ– प्रातःकाल में वाल्यावस्था में हंस पर स्थित रहती है। मध्याह्न में युवावस्था में गरुड पर स्थित रहती हैं। सायंकाल में वृद्धा में वृषभ (बैल) पर सवार रहती हैं। ऊपर का मत विशेष मतों मे सम्मिलित हैं ।

॥ गायत्री के पादों पर विचार ॥

वशिष्ठ संहिता में ब्रह्म नारद संवाद में गायत्री के तीन पाद से आरम्भ करके ग्यारह पाद तक का वर्णन सुचारुरीति से किया गया है– त्रिपदा चौवीस अक्षरों की इसी गायत्री में आठ अक्षर का एक चरण जोड़ देने में ३२ अक्षर वाली चतुष्पदा गायत्री होती है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चारपाद वाली में कोई आचार्य ३२ अक्षर मानते हैं। कुछ आचार्यो का मत है कि त्रिपदा गायत्री में ही ६-६ अक्षर का एक चरण मान-कर यही त्रिपदा गायत्री चतुष्पदा भी है। यह प्रमाण विश्वामित्र कल्प में आया है। चतुष्पादं तु गायत्रीमनुलोभ विलोमत:। नित्य-ञ्जाप्यं प्रकुर्वीत् भुक्तिम्मुक्तिं लभेन्नर:। इत्यादि अनेक प्रमाण हैं।

सारांश– गायत्री के अनेक स्वरूप हैं। द्विपदा -त्रिपदा-चुतुष्पदा-षट्पदा आदि अनेक पादों वाली हैं। तथा अनेक मुख वाली है। निराकार तथा साकार है। ओङ्कार स्वरूपा है। सविता आदि की उत्पादिका है। सूर्य-अग्नि-चन्द्र इनके मण्डल को प्रकाश करने वाली हैं। स्त्री व पुरुष-युवा-कुमार आदि अनेक रूप धारण करने वाली हैं। वेद जननी है। अतएव भ्रम में नपड़कर २४ अक्षर वाली गायत्री जो कि ग्रन्थ प्रारम्भ में लिखी है उसी का जप करना चाहिये। अनेक ऋषि हुये हैं अनेक मत हैं। जो गुरु परम्परा हो वही श्रेष्ठ मत है।

॥ इति गायत्री तत्वविवेचनम् ॥

भुवि विदित इटावा मण्डले वैसलेम,
पुर इह शुभ देशे ग्राम के ख्यातकीर्तौ।
बुधजनरमणीये कुर्वंतातत्रवासं,
सकलगुणनिधिश्रीश्यामलालात्मजेन ॥१॥

नवनयनखनेत्रेवत्सरे भाद्रमासे—
सितदलकुजवारे पूर्णिमायान्तिथौच।
गुरुचरणकृपातो वेदमातू रहस्यम्—
भुवनजनहितायालेखि पूर्णं शिवेन ॥२॥

भुवनजननरक्षा नाशकर्त्री पराद्या—
हरिहरविधिवन्द्या सच्चिदानन्दरूपा।
शिवमतिशिवदत्तेनानिशम्प्रार्थ्यतेया—
सकलजनहितङ्को सैवकुर्यात् पराम्वा ॥३॥

ग्रन्थान् बहून् पूर्णतया प्रमथ्य—
विद्वज्जनानाञ्च विलोक्यलेखान्—
संगृह्यतेभ्य: किलसारमेव—
देव्या: कृतन्तत्वविवेचनं हि ॥४॥

इति द्वितीयो भाग: समाप्त:।

इतिश्रीशिवदत्तशास्त्रिणाश्रीगायत्रीतत्वविवेचनंसमाप्तम्

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विशेष आवश्यक शब्दों का शुद्धाशुद्धपत्र

अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ पंक्ति
किसी द्वारा	किसी के द्वारा	५–१५
हो	हों	६– ५
समिआओं	समिधाओं	१०– ८
देनस	देने से	१४–१०
लकड़ीस	लकड़ी से	१४–१३
करा देती है	कर देती है	१४–१९
एतन्नयासविविङ्	एतन्न्यासविविङ्	१७–२३
वामदेव	वामदेवी	२०– ५
सत्यन्ता	सत्यान्ता	२२– २
उपप्युपरि	उपर्युपरि	२२– ३
प्रमाव्याहृतिस्मृता:	प्रथमाव्याहृति:स्मृता	२२– ७
(लोकानि)	(लोका:)	२२–१८
महस्तेनकथ्यते	महस्तेनप्रकथ्यते	२३–२१
अस्मद्घातो:	अस्मादघातो:	२४– १
ततआलोचने	तपआलोचने	२४–१६
सत्वत्वम्	सत्यत्वम्	२५– ५
प्रणवाघायतोवेदा:	प्रणवादायतोवेदा:	२५–१३
अवघातुगतिकर्मा	अवघातुर्गतिकर्मा	२५–१५
अवनष्टिलोप:	अवतेष्टिलोप:	२५–१८
प्राथनायाम्	प्रार्थनायाम्	२७– ८
वरेव्यम्	वरेण्यम्	२७– ९
निरतिशयामन्दरूपम्	निरतिशयानन्दरूपम्	२७–११
असोमर्ग	असौभर्ग:	२७–१७
ध्यैचिन्तापाम्	ध्यैचिन्तायाम्	२८– ७
शास्त्राधारे	शास्त्राधारेण	२७– १

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ पंक्ति
वयन्‍ध्यायेम्	वयन्ध्यायेम	२८– ९
मनसाधारयेम्	मनसाधारयेम	२८– ९
धम:थ काममोक्षे	धर्मार्थ काममोक्षे	२८–२०
कर्मषु	कर्ममु	२९– ४
प्रेग्थेत्	प्रेरयेत्	२९–११
अमृनम्यो क्षरूपम्	अमृतम्मोक्षरूपम्	२९–१७
इत्यादिपूरण:	इयादिपूरण:	३३– ८
त्रिकोण विन्यस्य	त्रिकोणं विन्यस्य	३७– ३
षटकोणन्	षट्कोणन्	३७– ३
स	सं	३८–२०
श्रो	श्रोत्र	३८–२२
स्वरुपिणी	स्वरूपिणी	३९– ५
सस्कार	संस्कार	३९–१५
अमतं	अमृतं	४२–१०
न्पासादि	न्यासादि	४२–१४
पङ्क्ति	पाङ्क्त	४३–१२
रसोडमृतं	रसोऽमृत	४८– ५
स्वगोभिति	स्वरोमिति	४८– ५
दिग्वन्धन	दिग्बन्धनं	५०–१०
द्विनीयवान्	द्वितीयवार	५१– ८
केशयर्यन्त	केशपर्यन्त	५१– ८
ह्लांदीप्तायै	ह्लांदीप्तायैनम:	५२–१४
ओंपूपूषायैनम:	ओंपूंपूषायैनम:	५४–२१
अङ्गुलियेंअँगूठी	अङ्गुलि में अँगूठी	५९– ७
इति ीठपूजादेवतासमाप्ता:	इतिपीठपूजादेवता:समाप्ता:	६६– ८
मव्य में	मध्य में	६६–१५
पश्चिम में	पश्चिम में	६६–१६
केशैशुकैरर्चितम्	केशै:शुकैरर्चितम्	७४–१६
भगवत्या श्री	भगवत्या:श्री	७५– १
ऋषयोज्ञेमाणि	ऋ-षयोरोमाणि	७९–२३
शरणम्हम्प्रयद्ये	शरणमहम्प्रयद्ये	८०– ३
यम्बकयजामहे	त्र्यम्बकंयजामहे	८३– १
नवनयनखनेत्रे	नगनयनखनेत्रे	८४–१९

(२०२७ वर्षे)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi